टाल्सटाय साहित्य • टाल्सटाय साहित्य • टाल्सटाय साहित्य • टाल्सटाय साहित्य • टाल्सटाय साहित्य • टाल्सटाय साहित्य • टाल्सटाय साहित्य • टाल्सटाय साहित्य

ईसा की सिखावन

ईसा की सिखावन

'टीचिंग्स ऑव क्राइस्ट' का अनुवाद

•

लियो टॉल्स्टाय

•

अनुवादक
संतराम 'विचित्र'

•

१९८५

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशक

यशपाल जैन

मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल

एन ७७, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-११०००१

दूसरी बार : १९८५

मूल्य : रु० 10/-

मुद्रक

चनाब आफसैट प्रिन्दसं

नई दिल्ली

प्रकाशकीय

'मण्डल' से अब तक टॉल्स्टॉय की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनमें से कुछ को तो असाधारण लोकप्रियता प्राप्त हुई है। वस्तुतः उनकी सभी रचनाएं नैतिक धरातल की हैं और यही कारण है कि पाठकों के लिए बड़े लाभ की हैं। विचार सुलझे तथा शैली सजीव होने के कारण ये पुस्तकें बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक की 'टीचिंग्स ऑव क्राइस्ट' का रूपान्तर है। जैसा कि उन्होंने अपने निवेदन में कहा है, इस पुस्तक की रचना बालकों को इञ्जील के कुछ चुने हुए अंश समझाने के लिए की गई थी। बालकों को समझाने के लिए बड़ी ही सरल भाषा और रोचक शैली का प्रयोग करना होता है। पाठक अनुमान कर सकते हैं कि इस पुस्तक की भाषा और शैली कितनी सुपाठ्य और सुबोध होगी।

सारी पुस्तक नीति-वचनों से भरी पड़ी है। भाव इञ्जील के हैं, भाषा टॉल्स्टॉय की है। कहीं-कहीं इतनी सुन्दर छोटी-छोटी कहानियां आती हैं कि पाठक पढ़कर कुछ समय के लिए विचार-मग्न हो जाता है।

पुस्तक एक बार पढ़कर उठाकर रख देने की नहीं है। उसे बार-बार पढ़ना चाहिए। साथ ही उसके विचारों का मनन करने और तदनुसार आचरण की भी आवश्यकता है।

इसके प्रकाशन के लिए कागज की सुविधा श्रीमती पुष्पावती खेतान ने की है। हम उनके आभारी हैं। उनके इस सहयोग के कारण हम पुस्तक का मूल्य इतना कम रख सके हैं।

आशा है, पाठक इस तथा लेखक की अन्य पुस्तकों का भरपूर लाभ लेंगे।

—मंत्री

दो शब्द

दस बरस से लेकर तेरह बरस तक के ग्रामीण बालकों की मैंने एक जमात बनाई थी। मेरी इच्छा थी कि इन बालकों को मैं ईसा की शिक्षाओं का इस ढंग से अध्ययन कराऊं कि वे उन्हें आसानी से समझ सकें और उनके जीवन पर भी उनका असर पड़े। इसलिए अपनी भाषा में मैंने उन्हें वे अंश पढ़ाये, जो मुझ बहुत ही सरल-सुबोध और बालकों के लिए अत्यन्त उपयुक्त जान पड़े, साथ ही नैतिक मार्ग-दर्शन के लिए बड़े ही आवश्यक।

जितना अधिक मैं इस दिशा में प्रयत्न करता गया, उतना ही बालकों के मेरे द्वारा बताई बातों के दोहराने के ढंग तथा उनके प्रश्नों से स्पष्ट होता गया कि बालक किन चीजों को सबसे अधिक आसानी से समझ सकते हैं और किन चीजों की ओर सबसे अधिक आकर्षित होते हैं।

अपने इसी अनुभव के आधार पर मैंने इस पुस्तक की रचना की है। मुझे विश्वास है कि इसके पठन-पाठन तथा उसके द्वारा ईसा की शिक्षा में निहित शाश्वत सत्यों को जीवन में उतारने की जो भावना पैदा होती है, उससे बालकों को लाभ ही होगा। ईसा के शब्दों में बालक ईश्वर के राज्य-सम्बन्धी शिक्षाओं को ग्रहण करने के लिए विशेष-रूप से समर्थ होते हैं।

—टॉल्स्टॉय

अनुक्रम

□□

□□

ईसा की सिखावन

: १ :
कल्याण का मार्ग

ईसा ने अपने उपदेशों और अपने जीवन से मनुष्यों को यह दिखा दिया कि हर आदमी में परमात्मा की शक्ति का वास है।

ईसा के उपदेशों के अनुसार, मनुष्यों में सब बुराइयाँ इसलिए आती हैं, क्योंकि वे सोचते हैं कि उनके प्राण उनके शरीर में ही बसते हैं, परमात्मा की शक्ति में नहीं। इसी कारण वे एक-दूसरे के साथ लड़ते हैं, इसी कारण उनकी आत्माओं को क्लेश होता है और इसी कारण वे मृत्यु से डरते हैं।

परमात्मा की शक्ति प्रेम है। प्रेम ही परमात्मा है और हर आदमी की आत्मा में प्रेम का वास है।

जब लोग यह विश्वास करने लगेंगे कि उनका जीवन परमात्मा की शक्ति में अर्थात् प्रेम में ही है, तब न वैमनस्य होगा, न मानसिक उत्पीड़न और न मृत्यु से भय।

हरकोई अपना कल्याण चाहता है। ईसा के उपदेशों से मनुष्यों ने यह जाना कि प्रेम ही से कल्याण होता है और सभी को यह कल्याण सुलभ हो सकता है। इसीलिए ईसा की शिक्षा को धर्मोपदेशों का नाम दिया गया।

: २ :

ईसा का उदय

१९०८ बरस हुए जब ईसा ने जॉसफ की पत्नी मेरी के गर्भ से जन्म लिया था ।

तीस बरस की आयु तक वह अपनी माँ, अपने पिता और भाइयों के साथ नाज़रथ में रहे । जब उनके पिता बहुत बूढ़े हो गए तो वह बढ़ई का काम करके अपने पिता की सहायता करने लगे ।

जब वह ३० बरस के हुए तो उन्होंने सुना कि लोग एक महात्मा के उपदेशों को सुनने के लिए जंगल में जाया करते हैं । उनका नाम था जॉन । सो वह भी जॉन के उपदेशों को सुनने के लिए औरों के साथ-साथ वहाँ गये ।

जॉन कहते थे कि प्रभु के राज्य की वेला आ गई है । उस प्रभु-राज्य में हर-कोई यह जान लेगा कि सब मनुष्य समान हैं, कोई भी किसी से ऊँचा नहीं है और न कोई किसी से छोटा है । सब मनुष्यों को प्रेम-पूर्वक रहना चाहिए और अपने पड़ोसियों के साथ सद्-व्यवहार करना चाहिए । उनका कहना था कि ऐसा समय निकट है; लेकिन ऐसा तभी होगा, जब लोग बुरे काम करने छोड़ देंगे ।

जब सरल हृदय लोग उनसे पूछते, "मुझे क्या करना चाहिए ?" तो जॉन उनसे कहते कि जिस किसीके पास दो पोशाकें हैं, उसे एक उस व्यक्ति को दे देनी चाहिए, जिसके पास एक भी नहीं है, और इसी प्रकार जिसके पास खाने को है, उसे उस व्यक्ति के साथ बाँट लेना चाहिए, जिसके पास बिलकुल नहीं है । अमीरों से जॉन कहते कि उन्हें लोगों को

लूटना नहीं चाहिए। सैनिकों से वह कहते कि दूसरों का माल मत छीनो। जो कुछ तुम्हें मिला है उसीमें संतोष करो और गाली-गलौज मत करो। फरीसियों, सडूसियों और वकीलों से वह कहते कि उन्हें अपने जीवन में फेर-बदल और प्रायश्चित करना चाहिए। वह उनसे कहते, "मत सोचो कि तुम कोई खास किस्म के इंसान हो। अपने जीवनों में परिवर्तन करो और ऐसा परिवर्तन करो कि लोग तुम्हारे कामों से देखें कि तुममें परिवर्तन हो गया है। यदि तुम बदलोगे नहीं तो तुम्हारी वही गति होगी, जो उस पेड़ की होती है, जिसपर फल नहीं लगते। यदि एक पेड़ फल नहीं देता तो उसे ईंधन के लिए काट दिया जाता है। अगर तुमने अच्छी करनी न की तो तुम्हारे साथ भी यही व्यवहार होगा। यदि तुम अपने जीवन में परिवर्तन नहीं करोगे तो तुम नष्ट हो जाओगे।"

जॉन ने हर किसी को प्रेरणा दी कि वह दयालु बने, न्यायप्रिय और नम्र बने। जो लोग अपने जीवन में परिवर्तन करने का वचन देते, उन्हें वह जीवन-परिवर्तन की निशानी के रूप में जार्डन नदी में स्नान कराते। जब स्नान करा चुकते तो कहते, "मैंने तुम्हें जल से पवित्र किया है, लेकिन तुम्हारी अन्तरात्मा में जो प्रभु-शक्ति विद्यमान है, वही तुम्हें पूर्णतया पवित्र कर सकती है।"

जॉन के ये शब्द, कि लोगों को अपने जीवन में परिवर्तन करना चाहिए, जिससे प्रभु का राज्य आ सके, और कि केवल परमात्मा की शक्ति से ही मनुष्य पवित्र हो सकते हैं, ईसा के दिल में गहरे पैठ गए। जो कुछ उन्होंने जॉन से सुना था उस सब पर विचार करने के लिए ईसा घर

लौटने की बजाय जंगल में ही रह गये। वहाँ वह कई दिन रहे। जॉन से उन्होंने जो कुछ सुना था, उसपर विचार करते रहे।

: ३ :

पवित्र जीवन

जॉन ने कहा था कि प्रभु-राज्य के उदय के लिए लोगों को प्रभु की शक्ति द्वारा पवित्र बनना होगा।

'प्रभु की शक्ति द्वारा पवित्र होने के अर्थ क्या है ?' ईसा ने सोचा। यदि परमात्मा की शक्ति से पवित्र होने का मतलब यह है कि किसी को भी केवल अपने ही लिए नहीं, प्रत्युत परमात्मा के आदेशानुसार जीना चाहिए, तो निश्चय ही प्रभु-राज्य का उदय हो सकता है। यदि सब मनुष्य उसी भावना के अनुसार रहने लगें तो वे सब एक हो जायंगे और वही प्रभु का राज्य होगा। लेकिन मनुष्यों को अपने शरीरों और साथ-ही-साथ अपनी आत्मा के लिए भी जीना होगा। अगर वह निजी शरीरों और केवल निजी शरीरों की सेवा करने के लिए ही जीते हैं और उसी को मुख्य कर्म बना लेते हैं तो वे सब जुदा-जुदा होकर रहने लगेंगे, जैसाकि वे इस समय करते हैं। उस दशा में प्रभु-राज्य का कभी उदय नहीं होगा। 'तो फिर क्या किया जाय ?' ईसा के मन में विचार उठा। केवल आत्मा के लिए जीना तो असंभव है और सांसारिक लोगों की तरह केवल तन के लिए जीना भी भूल है। अगर हम इसी तरह जियेंगे तो हम सब जुदा-जुदा रहेंगे और प्रभु-राज्य का कभी उदय नहीं होगा। तो फिर क्या किया जाय ? इससे भी

काम नहीं चलेगा कि एक मनुष्य अपने तन को खत्म कर डाले, क्योंकि जीव परमात्मा की इच्छा से ही शरीर में वास करता है, इसलिए किसी का निज की हत्या करना परमात्मा की इच्छा के विपरीत जाना हुआ।

यह विचारकर, ईसा ने अपने-आपसे कहा, "तो इसका मतलब यह है कि हम केवल आत्मा के लिए नहीं जी सकते, क्योंकि आत्मा तो शरीर में वास करता है। और हमें केवल शरीर के लिए ही उसकी सेवा करते हुए नहीं जीना चाहिए, जैसाकि बहुधा लोग करते हैं। न हम अपने-आपको शरीर से स्वतंत्र कर सकते हैं, क्योंकि आत्मा परमात्मा की इच्छा से शरीर में वास करता है। तो फिर किया क्या जा सकता है? केवल एक उपाय है, और वह यह कि हम परमात्मा की इच्छानुसार शरीर में वास कर सकते हैं, लेकिन शरीर में रहते हुए हमें उसकी नहीं, बल्कि परमात्मा की सेवा करनी होगी।"

इस निष्कर्ष पर पहुँचने के बाद, ईसा जंगल से रवाना हो गये और अपने उपदेशों का प्रचार करने के लिए नगरों और ग्रामों में गये।

: ४ :

अन्तः-खोज

कुछ ही समय में ईसा की चर्चा चारों ओर फैल गई और बहुत से लोग उनके प्रवचनों को सुनने के लिए उनके पास आने लगे।

उन्होंने लोगों से ये शब्द कहे :

"आप लोग जॉन के प्रवचनों को सुनने के लिए जंगल में

गये थे। आप क्यों गये थे ? कोई सुंदर-सुंदर वस्त्र-धारी लोगों को देखने जाता है, लेकिन ऐसे लोग तो राजमहलों में रहते हैं। उस जंगल में तो ऐसा कुछ भी नहीं था। फिर आप जॉन के पास जंगल में क्यों गये ? आप एक ऐसे आदमी की बातें सुनने गये, जिसने आपको सिखाया कि क्यों-कर अच्छा जीवन बिताया जा सकता है। उन्होंने आपको क्या शिक्षा दी ? उन्होंने आपको सिखाया कि फिर से प्रभु-राज्य का उदय होगा, लेकिन उसके उदय के लिए—और इसलिए कि इस संसार में कोई बुराई न रहे—यह आवश्यक है कि मनुष्य जुदा-जुदा न रहें, हरकोई अपने-आपके लिए न जिये, बल्कि सब एक हो जायं, और सब एक-दूसरे के साथ प्रेम-पूर्वक रहें। इसका मतलब यह हुआ कि प्रभु-राज्य के उदय के लिए सबसे पहले आपको अपने जीवन में परिवर्तन करना होगा। प्रभु-राज्य का आप-से-आप उदय नहीं होगा, परमात्मा स्वतः उस राज्य की स्थापना नहीं करेंगे। लेकिन उस प्रभु-राज्य की स्थापना तो आपको करनी होगी। यह आप कर सकते हैं, लेकिन तभी जब आप अपने जीवन के ढंग में परिवर्तन करने की चेष्टा करेंगे।

"यह न समझिए कि प्रत्यक्ष रूप में प्रभु-राज्य प्रकट होगा। प्रभु-राज्य को आँखों से नहीं देखा जा सकता। अगर कोई आपको बतलाता है कि यह यहाँ अथवा वहाँ है, तो उस पर विश्वास न करो और न उसकी खोज करो। प्रभु-राज्य किसी समय-विशेष या स्थान-विशेष में नहीं है। वह सर्वत्र है और कहीं भी नहीं है, क्योंकि वह स्वतः आपके अन्दर है, आपकी निजी आत्मा में है।"

: ५ :

सत्य-आचरण

ईसा ने अधिकाधिक स्पष्टतापूर्वक अपने उपदेशों की व्याख्या की। एक बार जब उनके पास बहुत-से लोग आये तो उन्होंने उन्हें बताया कि प्रभु-राज्य के उदय के लिए मनुष्यों को किस प्रकार जीवन बिताना चाहिए।

उन्होंने कहा :

"प्रभु का राज्य सांसारिक राज्यों से सर्वथा भिन्न होता है। प्रभु के राज्य में अहंकारी और अमीर प्रविष्ट नहीं होंगे। अहंकारी और अमीर इस समय शासन करते हैं, वे अपने-आपको सुखी रखते हैं, हरकोई उनकी प्रशंसा और उनकी इज्जत करता है; लेकिन जबतक वे अहंकारी और अमीर हैं और उनकी आत्माओं में प्रभु-राज्य नहीं है, वे प्रभु-राज्य में प्रविष्ट नहीं होंगे। प्रभु-राज्य में अहंकारी नहीं, बल्कि नम्र प्रविष्ट होंगे, अमीर नहीं बल्कि ग़रीब प्रविष्ट होंगे। लेकिन नम्र और ग़रीब भी उसमें तभी प्रवेश पा सकेंगे, जबतक कि वे नम्र और गरीब हैं, क्योंकि ऐसे होने पर ही वे बड़े और अमीर बनने के लिए गुनाह नहीं करेंगे, केवल इसीलिए नहीं कि वे अमीर और बड़े बनने के लायक नहीं हैं। अगर आप केवल इसलिए ग़रीब हैं कि आप संपत्ति प्राप्त करने के अयोग्य हैं तो आप उस नमक के समान हैं, जिसका कोई स्वाद नहीं। वह नमक बिल्कुल बेकार है, जिसमें नमकीन स्वाद नहीं। अगर वह नमकीन नहीं है तो वह किसी भी काम का नहीं और उसे फैंक दिया जाता है।

"यही दशा आपकी है। अगर आप केवल इसलिए ग़रीब

हैं कि आपको यह पता नहीं था कि अमीर कैसे बना जाता है तो आप भी किसी लायक नहीं—न तो ग़रीब होने लायक और न अमीर होने लायक ।

"इसलिए दूसरी सब बातों से पहले यह आवश्यक है कि प्रभु-राज्य में प्रवेश पाया जाय। प्रभु-राज्य और उसकी सत्यता की खोज करो, आपकी सब आवश्यकताएँ पूरी हो जायँगी ।

"यह मत सोचो कि मैं आपको किसी नई बात की शिक्षा दे रहा हूँ। सब बुद्धिमान और संत पुरुषों ने जो सिखाया था, वही मैं आपको सिखाता हूँ। मैं तो आपको केवल यही बतलाता हूँ कि उन्होंने जो शिक्षा दी थी, उसे आप कैसे पूरा कर सकते हैं। उसे पूरा करने के लिए आपको परमात्मा के आदेशों का पालन करना होगा—झूठे उपदेशकों की तरह केवल उनकी चर्चा करके नहीं, बल्कि उनपर अमल करके, क्योंकि केवल वही, जो परमात्मा के आदेशों पर अमल करता है और अपने आचरण से दूसरों को उनपर अमल करना सिखाता है, स्वर्ग के राज्य में प्रविष्ट होगा।"

: ६ :

धर्मादेश

ईसा ने कहा :

"पहला आदेश यह है : पुराने 'धर्म-ग्रंथ' में कहा गया था, "किसी की हत्या न करो" और "जो कोई हत्या करता है, वह गुनहगार है।"

"लेकिन मैं आपको बतलाता हूँ कि अगर एक आदमी अपने भाई पर गुस्सा करता है तो वह परमात्मा की दृष्टि में

गुनहगार है और उस हालत में तो वह और भी ज्यादा गुनहगार है, जबकि वह अपने भाई को गालियाँ देकर कड़ुवी बातें कहता है । इसलिए अगर आप प्रार्थना करना शुरू करते हैं और आपको याद आता है कि आप अपने भाई के साथ गुस्सा हैं तो पहले जाकर उसके साथ सुलह कीजिए । या अगर आप किसी कारण वैसा नहीं कर सकते तो आपके दिल में उसके प्रति जो गुस्सा है, उसे दूर कर दीजिए ।

"यह है पहला आदेश ।

"दूसरा आदेश यह है : पुराने 'धर्म-ग्रंथ' में कहा गया था, "व्यभिचार मत करो, और अगर आप अपनी पत्नी से अलग होते हैं तो उसे तलाक दीजिए ।"

"लेकिन मैं आपसे कहता हूँ कि न केवल मनुष्य को व्यभिचार नहीं करना चाहिए, बल्कि अगर वह किसी स्त्री को अपने मन में बुरे विचार रखकर देखता है तो परमात्मा के समक्ष तो वह गुनहगार है ही । और तलाक के विषय में मैं आपको बतलाता हूँ कि जो आदमी अपनी पत्नी को तलाक देता है, वह खुद व्यभिचार करता है, और अपनी पत्नी से भी वैसा कराने का कारण बनता है, साथ ही उसे भी गुनहगार बनाता है, जो तलाक दी हुई स्त्री के साथ ब्याह करता है ।

"यह है दूसरा आदेश ।

"तीसरा आदेश यह है : पुराने 'धर्म-ग्रंथ' में आपको बताया गया था, "कसम न खाओ, किन्तु परमात्मा के समक्ष अपनी प्रतिज्ञाओं पर स्थिर रहो ।"

"लेकिन मैं कहता हूँ कि आपको हरगिज कसम नहीं खानी चाहिए, लेकिन अगर आपसे किसी बारे में पूछा जाय तो

'हाँ' कहिए, बशर्तेकि वह 'हाँ' है, और 'न' कहिए, बशर्तेकि वह 'न' है। आपको किसी भी बात के लिए कसम नहीं खानी चाहिए। मनुष्य सर्वथा परमात्मा की शक्ति के अधीन है और वह पहले से उस कर्म के लिए वचन नहीं दे सकता, जिसके लिए उसकी प्रतिज्ञा उसे बाँधती है।

"यह है तीसरा आदेश।

"चौथा आदेश यह है: पुराने 'धर्म-ग्रंथ' में कहा गया था, "आँख के बदले आँख फोड़ दो और दाँत के बदले दाँत तोड़ दो।"

"लेकिन मैं कहता हूँ कि आपको बुराई के बदले बुराई नहीं करनी चाहिए और आँख के बदले आँख या दाँत के बदले दाँत नहीं तोड़ना चाहिए। अगर कोई आपके एक गाल पर चांटा मारे तो चांटे का जवाब चांटे से देने की बजाय यह बेहतर है कि उसके सामने दूसरा गाल कर दो। अगर कोई आपसे आपका कुरता छीनना चाहता है तो बेहतर है कि आप उसके दुश्मन बनने और अपने भाई के साथ लड़ने की बजाय उसे अपना कोट भी देदें। आपको बुराई का सामना बुराई से नहीं करना चाहिए।

"यह है चौथा आदेश।

"पाँचवाँ आदेश यह है: आपके पुराने 'धर्म-ग्रंथ' में यह कहा गया था, "अपनी ही जाति के लोगों से प्रेम करो और दूसरी जातियों के लोगों से नफ़रत।"

"लेकिन मैं आपसे कहता हूँ कि आपको हरकिसी के साथ प्रेम करना चाहिए। अगर मनुष्य अपने-आपको आपके शत्रु समझते हैं तब भी आपको उनसे प्रेम करना चाहिए

और उनके कल्याण की कामना करनी चाहिए। सारे मनुष्य एक ही पिता के पुत्र हैं, सब भाई-भाई हैं, और इसलिए आपको हर-एक के साथ समान-भाव से प्रेम करना चाहिए।

"यह है पाँचवाँ और आखिरी आदेश।"

: ७ :

पारस्परिक प्रेम

और ईसा ने उन सबको, जो उनकी बातें सुन रहे थे, आगे बताया कि यदि वे उसके आदेशों का पालन करेंगे तो क्या होगा।

उन्होंने कहा, "यह न सोचिए कि अगर आप लोगों के साथ गुस्सा नहीं करते, सबके साथ शांतिपूर्वक रहते हैं, पत्नी-व्रत पालन करते हैं, कसम नहीं खाते, जो आपको हानि पहुँचाते हैं उनसे अपनी रक्षा नहीं करते, जो-कुछ आपसे पूछा जाता है, उसे सच्चे दिल से कह देते हैं, और अपने दुश्मनों से प्यार करते हैं और इस ढँग से जीवन चलाते हैं, तो आपकी ज़िंदगी वर्तमान की अपेक्षा अधिक मुश्किल और बुरी हो जायगी। आपका जीवन वर्तमान की अपेक्षा बुरा नहीं होगा, बल्कि उससे बेहतर ही होगा। हमारे दैवी पिता ने हमें यह नियम इसलिए दिया है कि हम अपने जीवन को बुरा न बनावें, बल्कि इसलिए कि हमारा जीवन सच्चा जीवन हो।

"इस शिक्षा के अनुसार रहो, प्रभु-राज्य का उदय हो जायगा और आपकी सब आवश्यकताएँ पूरी हो जायंगी।

"परमात्मा ने पंछियों और जंगली जानवरों के लिए नियम बना दिये हैं और जब वे उन नियमों के अनुसार रहते हैं तो उनका सिलसिला ठीक चलता है। आपका भी सिलसिला

ठीक चलता रहेगा बशर्तेकि आप परमात्मा के नियम का पालन करें। मैंने जो-कुछ कहा है, वह अपनी ओर से नहीं कहा, बल्कि यह परमात्मा का नियम ही बताया है, जो सब मनुष्यों के दिलों में अंकित है। अगर इस नियम से मनुष्यों का कल्याण न होता तो परमात्मा ने उसे बनाया ही न होता।

"संक्षेप में, वह नियम यह है कि हमें परमात्मा और अपने पड़ोसी को अपनी जान की तरह प्यार करना चाहिए। जो कोई इस नियम का पालन करता है, वह दूसरों के साथ वही बरताव करता है, जो वह चाहता है कि वे लोग उसके साथ करें।

"इसलिए हर-कोई, जो मेरे इन शब्दों को सुनता और उनपर अमल करता है, उस मनुष्य के समान कर्म करता है जो अपना मकान एक चट्टान पर बनाता है। ऐसा मनुष्य न तो वर्षा से, न बाढ़ों से, और न तूफानों से डरता है, क्योंकि उसका मकान चट्टान पर बना हुआ है। लेकिन हर-कोई, जो मेरे शब्दों को सुनता है और उनपर अमल नहीं करता, उस विचारहीन मनुष्य के समान कर्म करता है, जो अपना मकान बालू पर बनाता है। ऐसा मकान वर्षा या तूफानों का मुकाबला नहीं कर सकेगा और गिरकर तहस-नहस हो जायगा।"

जब महात्मा ईसा सब बातें कह चुके तो लोग उनके उपदेशों को सुनकर विचार में पड़ गये।

: ८ :

कर्म-मार्ग

इसके बाद ईसा ने लोगों को मिसालें दे-देकर प्रभु-राज्य के अर्थ समझाने शुरू किये।

उन्होंने जो पहली मिसाल दी वह इस प्रकार है :

"जब एक आदमी अपने खेत में बीज बोता है तो वह उसी की चिंता में नहीं डूब जाता, बल्कि वह रात को सोता है और सबेरे उठकर अपना कारबार करता है; वह कतई परेशान नहीं होता कि कैसे बीज फूटेंगे और बढ़ेंगे। समय पाकर बीज फूटते हैं और फूलते हैं, हरियाली दिखाई देती है, डंठल बनते हैं, बालें निकलती हैं और अनाज भर जाता है। और जब अनाज पक जाता है, तभी मालिक उसे काटने के लिए मज़दूरों को वहाँ भेजता है।

"इसी तरह परमात्मा भी अपनी शक्ति से मनुष्यों में 'स्वर्ग-राज्य' की स्थापना नहीं करते, बल्कि लोगों पर छोड़ देते हैं कि वे स्वतः उसकी स्थापना करें।"

ईसा ने उन्हें एक दूसरी मिसाल यह समझाने के लिए दी कि जिनकी अन्तरात्मा में 'स्वर्ग-राज्य' नहीं है, उन्हें परमात्मा अपने राज्य में शामिल नहीं करता। उन्हें वह इसी संसार में छोड़ देता है, जिससे वे अपने-आपको 'प्रभु-राज्य' में प्रविष्ट होने के योग्य बनावें।

उन्होंने कहा :

"स्वर्ग का राज्य' एक मछिहारे के समान है, जो अपना जाल समुद्र में फैंकता है और सब तरह की मछलियाँ पकड़ लेता है। उन्हें पकड़ लेने के बाद वह उन्हें छाँटता है। जिनकी उसे आवश्यकता होती है, उन्हें वह रख लेता है और जो उसके काम की नहीं होतीं उन्हें वह फिर-से समुद्र में फैंक देता है।"

इसी बात के लिए उन्होंने एक तीसरी मिसाल दी :

"एक किसान-मालिक ने अपने खेत में बड़ा अच्छा बीज बोया था, लेकिन जब बीज उगने लगे तो उनके साथ-साथ घास भी उग आई। इसपर मज़दूर आये और उन्होंने मालिक से कहा, 'क्या आपने ख़राब बीज बोया था ? आपके खेत में तो बहुत-सी घास उग आई है। हमें आज्ञा दीजिए, हम जाकर उसे उखाड़ डालेंगे।' लेकिन मालिक ने जवाब दिया, 'नहीं, बेहतर तो यही है कि आप लोग न जायं, वरना घास को उखाड़ते हुए गेहूँ भी आप लोगों के पांवों तले मसल जायंगे। उन्हें साथ-साथ ही उगने दो और फसल-कटाई के समय में कटाई करनेवालों से कह दूंगा कि गेहूँ तो जमा कर लें और घास को निकाल फेंकें।'

"इसी प्रकार परमात्मा भी लोगों को इस बात की इजाज़त नहीं देता कि वे दूसरों के जीवन में दखल दें। वह खुद भी दखल नहीं देता। केवल अपने निजी यत्नों से ही हर आदमी परमात्मा तक पहुँच सकता है।"

: ६ :

प्रभु-राज्य

इन मिसालों के अलावा, ईसा ने 'स्वर्ग के राज्य' के बारे में एक और मिसाल दी।

उन्होंने कहा :

"जब एक खेत में बीज बोये जाते हैं तो सब-के-सब एक-से नहीं उगते। होता प्रायः इस प्रकार है : कुछ बीज रास्ते पर गिर जाते हैं और पंछी आकर उन्हें चुग जाते हैं। कुछ पथरीली धरती पर गिरते हैं और अगर्चे वे उगते तो

हैं, लेकिन थोड़े ही समय के लिए उगते हैं, क्योंकि उनके आस-पास इतनी मिट्टी नहीं होती कि उसमें वह अपनी जड़ों को जमा लें और इसलिए उनके अंकुर जल्दी ही सूख जाते हैं। कुछ बीज कांटों पर गिरते हैं और कांटे उन्हें दबा लेते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं, जो अच्छी ज़मीन पर गिरते हैं, पैदा होकर बड़े हो जाते हैं और एक-एक दाने से तीस या साठ दाने फलते हैं।

"यही दशा आदमियों की है। कुछ ऐसे हैं, जो अपने दिलों में 'स्वर्ग का राज्य' प्राप्त नहीं करते, उन्हें बाहरी प्रलोभन आ घेरते हैं और जो बोया था उसे चुरा लेते हैं। ये वे बीज हैं, जो रास्ते पर बोये गए थे। इसके बाद वे आदमी हैं, जो पहले तो खुशी-खुशी उपदेशों को स्वीकार करते हैं; लेकिन जब उनका अपमान होता है और उसके लिए उन्हें पीड़ा दी जाती है, तो वे उससे विमुख हो जाते हैं। ये वे बीज हैं, जो पथरीली ज़मीन पर बोये गए थे। इसके बाद वे लोग हैं, जो 'स्वर्ग के राज्य' के अर्थ समझते हैं, लेकिन उनके भीतर का संसारी मोह और संपत्ति का लोभ उन्हें दबा लेता है। ये वे बीज हैं जो कांटों में बोये गए थे। लेकिन वे बीज, जो अच्छी धरती पर बोये गए थे, वे हैं, जो 'स्वर्ग के राज्य' के अर्थ समझते हैं और उसे अपने दिलों में जगह देते हैं। ये लोग फूलते-फलते हैं—कुछ तो तीस-गुना और कुछ साठ-गुना और कुछ सौ-गुना।

"मतलब यह कि जिसे जो दिया गया था, उसने वह संभाल रखा है, तो उसे और भी ज्यादा मिलेगा, लेकिन उस व्यक्ति से सब-कुछ छीन लिया जायगा, जिसने दिये

हुए को संभाल कर नहीं रखा। इसलिए 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश करने के लिए अपनी सारी शक्ति के साथ यत्न करो। अगर आप उसमें प्रविष्ट हो सकते हैं, तो और किसी भी बात के लिए ईर्ष्या मत करो।

"उस आदमी की तरह काम करो, जिसे, जब यह पता चल गया कि अमुक खेत में बड़ा भारी खजाना दबा पड़ा है, तो उसने जो-कुछ उसके पास था सब बेच कर उस खेत को ख़रीद लिया और अमीर बन गया। आपको भी वैसा ही करना चाहिए।

"सदा याद रखो कि जिस प्रकार एक छोटा-सा बीज बढ़ कर एक बड़ा पेड़ हो जाता है, उसी तरह 'स्वर्ग के राज्य' के लिए थोड़े-से यत्न का बहुत-बड़ा परिणाम मिलता है।

"हर-कोई अपने निजी यत्न से 'प्रभु-राज्य' प्राप्त कर सकता है, क्योंकि 'प्रभु-राज्य' आपके भीतर विद्यमान है।"

: १० :

आत्मिकबल

इन शब्दों को सुनने के बाद निकोडमस नाम का एक फरीसी ईसा के पास आया और उसने पूछा कि 'प्रभु-राज्य' हमारे भीतर है, यह कैसे समझ में आ सकता है? ईसा ने कहा, "प्रभु-राज्य हमारे भीतर है, इसका अर्थ यह है कि उसमें प्रविष्ट होने के लिए हमें फिर से जन्म लेना होगा।"

तब निकोडमस ने पूछा, "मनुष्य फिर से कैसे पैदा हो सकता है? क्या मनुष्य अपनी माता के गर्भ में लौट सकता है और फिर से जन्म ले सकता है?"

ईसा ने जवाब में कहा, "फिर से जन्म लेने का यह अर्थ नहीं कि जिस प्रकार एक हाड़-मांस का बच्चा अपनी माँ के गर्भ से जन्म लेता है, उसी तरह जन्म लिया जाय ; बल्कि इसका मतलब यह है कि उस शक्ति का उदय हो जाय। शक्ति के उदय होने का अर्थ यह समझ लेना है कि मनुष्य में पर-मात्मा की शक्ति का वास है। जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य अपनी माता के गर्भ से जन्म लेता है, उसी प्रकार परमात्मा की शक्ति से भी जन्म लेता है। जो-कुछ शरीर में से जन्मता है, वह शरीर का ही अंश है। उसे यातना अनुभव होती है और मरता भी है। जो-कुछ शक्ति में से जन्मता है, वह शक्ति का अंश होता है, और वह जीवित रहता है। न तो उसे यातना हो सकती है और न वह मरता है।

"परमात्मा ने मनुष्यों में अपनी शक्ति इसलिए उत्पन्न नहीं की कि वे पीड़ित हों और मर जायं, बल्कि इसलिए कि उनका जीवन सुखद और चिरस्थायी हो। प्रत्येक मनुष्य उस जीवन को प्राप्त कर सकता है। ऐसा जीवन 'स्वर्ग का राज्य' है।

"इसलिए प्रभु-राज्य का यह अर्थ नहीं समझना चाहिए कि किसी समय-विशेष और स्थान-विशेष में हर-किसी के लिए 'प्रभु-राज्य' का उदय होगा; बल्कि यह कि यदि लोग अपने अन्दर की परमात्मा की शक्ति को जान लेंगे और उसके अनुसार आचरण करेंगे, तभी वे 'स्वर्ग के राज्य' में प्रविष्ट होंगे और उन्हें यातना अथवा मृत्यु सहन नहीं करनी होगी। लेकिन अगर लोग अपने अन्दर की शक्ति का अनुभव नहीं करते और अपने शरीरों के लिए ही जीते हैं, तब वे यातना सहेंगे और मरेंगे।"

: ११ :

सबसे प्रेम करो

अधिकाधिक लोग ईसा के अनुयायी बनते गये और उनके उपदेशों को सुनने लगे, लेकिन फरीसियों को यह पसन्द नही था। उन्होंने यह सोचना शुरू किया कि लोगों की नज़रों में ईसा को कैसे दोषी ठहराया जा सकता है ?

एक शनिवार को ईसा और उनके शिष्य खेतों में से होकर निकल रहे थे। शिष्यों ने अनाज की बालियाँ तोड़ लीं, उन्हें दोनों हाथों से मसला और अनाज के दाने खा लिये। यहूदियों की शिक्षा के अनुसार परमात्मा ने मूसा के साथ समझौता किया था कि लोग शनिवार के दिन कोई काम नहीं करेंगे और केवल परमात्मा की ही पूजा किया करेंगे। फरीसियों ने यह देखकर कि ईसा के शिष्यों ने शनिवार के दिन अनाज की बालियों को मसला है, उन्हें रोका और कहा :

"आपको शनिवार के दिन ऐसा नहीं करना चाहिए था। शनिवार के दिन तो कोई काम नहीं करना चाहिए, लेकिन आप लोग अनाज निकाल रहे हैं। नियम में कहा गया है कि जो लोग शनिवार को काम करेंगे उन्हें मार डाला जायगा।"

ईसा ने यह सुना और वे बोले, "नबी ने कहा था कि परमात्मा तो प्रेम चाहते हैं, बलि नहीं। अगर आप लोगों ने उन शब्दों को समझ लिया है तो मेरे शिष्यों की निन्दा नहीं करनी चाहिए। शनिवारों की अपेक्षा मनुष्य अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।" फरीसियों से इसका कोई उत्तर न बन पड़ा और वे चुप हो गये।

एक और दिन की बात है। कुछ फरीसियों ने ईसा को

मती के घर में दाख़िल होते देखा। मती तहसीलदार था। ईसा ने उसके घर के लोगों के साथ बैठकर भोजन किया। जिन लोगों के साथ उन्होंने भोजन किया था, फरीसी उन्हें गुनहगार समझते थे। इस कारण उन्होंने ईसा पर यह दोष लगाया कि गुनहगारों के साथ भोजन करना नियम के ख़िलाफ है।

लेकिन ईसा ने कहा, "मैं उन लोगों को सत्य का उपदेश देता हूँ, जो उसके इच्छुक हैं। आप लोग अपने को ईमानदार समझते हैं और सोचते हैं कि आपको सत्य का ज्ञान है, इसलिए आपके सीखने को और कुछ भी बाकी नहीं रहा। इसका मतलब यह है कि जो लोग ईमानदार नहीं हैं, केवल उन्हींको शिक्षा दी जा सकती है और अगर हम उन लोगों के साथ हेल-मेल नहीं करेंगे तो वे सचाई सीखेंगे कैसे ?"

इसपर जब फरीसियों से इसका कोई जवाब न बन पड़ा तो उन्होंने ईसा के शिष्यों को बिना हाथ धोये खाने के लिए भला-बुरा कहना शुरू कर दिया। वे स्वतः अपने हाथ और अपनी तश्तरियाँ धोने की निजी परंपरा का बड़ी कड़ाई के साथ पालन करते थे और बाज़ार से आई किसी भी चीज को धोये बिना नहीं खाते थे।

इस बारे में ईसा ने उत्तर दिया, "आप लोग हमें इस-लिए भला-बुरा कहते हैं कि हम खाने से पहले हाथ धोने की परंपरा को नहीं मानते, लेकिन यह चीज ऐसी नहीं है जो मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट हो जाय और उसे अपवित्र कर दे। मनुष्य की आत्मा में से निकलनेवाली और उसे अपवित्र बनानेवाली बुराइयाँ तो हैं—व्यभिचार, हत्या, चोरी, तृष्णा,

क्रोध, बेईमानी, निर्लज्जता, दुश्मनी, निंदा, अहंकार वग़ैरा। ये सब बुराइयाँ मनुष्य की आत्मा से निकलती हैं और केवल बुराई से ही मनुष्य अपवित्र हो सकता है। आपकी आत्मा में अपने भाइयों के लिए प्रेम होना चाहिए और तब प्रत्येक वस्तु पवित्र होगी।"

: १२ :

प्रार्थना-मार्ग

एक बार ईसा अपने शिष्यों से जुदा हो गए और प्रार्थना करने लगे। जब उन्होंने प्रार्थना कर ली तो शिष्य उनके पास गये और बोले, "स्वामी, हमें प्रार्थना करने की सीख दीजिए।"

ईसा ने उनसे कहा :

"सबसे पहली बात तो यह है, आप लोगों को वैसे प्रार्थना नहीं करनी चाहिए जैसे कि अक्सर की जाती है, यानी कि लोग आपको प्रार्थना करते हुए देखें और उसके लिए आपकी तारीफ़ करें। अगर यह इस ढंग से की जाती है तो यह मनुष्यों के लिए की जाती है, और इसके बदले मनुष्य ही इनाम देते हैं। आत्मा को इस तरह की प्रार्थनाओं से कोई लाभ नहीं होता। लेकिन अगर आप प्रार्थना करना चाहते हैं तो ऐसे स्थान पर जाइये जहाँ आपको कोई न देखे और वहाँ अपने प्रभु के चरणों में प्रार्थना कीजिए। प्रभु आपको आपकी आत्मा की जो आवश्यकता होगी, प्रदान करेंगे।

"जब आप प्रार्थना करें तो बहुत-सी बातें न कहिए। परमात्मा को आपकी आवश्कताओं का ज्ञान है, यहाँ तक कि अगर आप कुछ भी न माँगें, तो भी वह आपकी आत्मा की सब

आवश्यकताओं को पूरी करेंगे।

"सबसे पहले आपको यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे अंदर परमात्मा की जो शक्ति है, वह पवित्र हो; अर्थात् हमारी आत्मा में 'स्वर्ग के राज्य' का उदय हो; हम अपनी इच्छा के अनुसार नहीं वरन परमात्मा की इच्छानुसार जीवन बितावें; हम अधिक के लिए इच्छा न करें बल्कि केवल अपने प्रतिदिन के भोजन की इच्छा रखें; परमात्मा इस बात में हमारी सहायता करें कि हम अपने भाइयों के गुनाहों को माफ करें और प्रलोभनों तथा बुराइयों से बचने में वे हमारी सहायता करें।

"आप लोगों की प्रार्थना यह होनी चाहिए :

"हे प्रभु, तेरा वास स्वर्ग में है। तेरा नाम पावन हो। तेरे राज्य का उदय हो। स्वर्ग के समान ही धरती पर भी तेरी इच्छा पूर्ण हो। प्रति दिन के समान आज भी हमें रोटी दे। हमें हमारे गुनाहों के लिए माफ कर, जैसेकि हम अपने प्रति गुनाह करनेवालों को माफ करते हैं। हमें प्रलोभन तथा बुराई से बचा।

"यह है प्रार्थना करने का ढंग; लेकिन अगर आप प्रार्थना करना चाहते हैं तो पहले यह विचार करो कि आपके दिल में किसी के प्रति क्रोध तो नहीं है। यदि आपको स्मरण हो कि क्रोध है तो पहले जाकर उसके साथ सुलह करो, अथवा अगर उस आदमी को पा न सकें तो आपके दिल में उसके प्रति जो क्रोध है, उसे निकाल दें और उसके बाद प्रार्थना शुरू करें। तभी आपकी प्रार्थना आपके लिए उपयोगी होगी।"

: १३ :

पश्चात्ताप से पवित्रता

एक बार की बात है कि ईसा एक फरीसी के यहाँ भोजन करने गये। जब वह वहाँ थे तो शहर की एक औरत भीतर आई। वह एक बदनाम औरत थी। उसने सुना था कि ईसा फरीसी के मकान में हैं और वह वहाँ जा पहुँची। उसके पास एक इत्र की बोतल थी। वह ईसा के चरणों में जा झुकी और रोई। उसके आँसू ईसा के पाँवों पर गिरे। उसने उन्हें अपने बालों से साफ कर दिया और उनपर अपनी बोतल में से इत्र उंडेल दिया।

यह देखकर फरीसी परेशान-सा हुआ और उसने सोचा कि अगर ईसा वस्तुतः नबी हैं तो उन्हें यह मालूम हो जाना चाहिए था कि यह औरत बदनाम है और गुनहगार है, इसलिए उसे अपने को छूने की आज्ञा नहीं देनी चाहिए थी।

फरीसी के विचारों को ईसा ने भांप लिया और उसे संबोधित करके उन्होंने कहा :

"क्या मैं आपको बताऊँ कि मैं क्या सोच रहा हूँ ?"

"हाँ, बताइए," फरीसी ने कहा।

ईसा ने कहा :

"एक अमीर आदमी के दो व्यक्ति ऋणी थे। एक पचास पौंड का कर्जदार था, दूसरा पाँच पौंड का। दोनों में से किसी के पास भी देने को कुछ नहीं था। उस अमीर आदमी ने उन दोनों को माफ कर दिया। अब आप बताइए कि दोनों में से उस अमीर आदमी को कौन अधिक प्यार करेगा और मान देगा ?"

फरीसी ने कहा :

"निश्चय ही जो ज्यादा कर्ज़दार था।"

इसपर ईसा ने उस औरत की ओर संकेत करते हुए कहा :

"यही दशा आपकी और इस औरत की है। आप अपने को सही समझते हैं, और इसलिए परमात्मा के प्रति बहुत देनदार नहीं। यह औरत अपने-आपको गुनहगार समझती है, इसलिए परमात्मा के प्रति इसकी देनदारी बहुत है। जब मैं आपके मकान में आया था तो आपने मुझे पांव धोने के लिए किसी तरह का पानी नहीं दिया था; लेकिन इस औरत ने उन्हें आँसुओं से धोया और उन्हें अपने बालों से सुखाया। आपने मुझे चूमा नहीं, लेकिन उसने मेरे पाँवों को चूमा। आपने सिर पर लगाने के लिए किसी तरह का तेल नहीं दिया, किंतु इसने मेरे पाँवों में मंहगा इत्र उंडेला। वह अपने-आपको गुनहगार समझती है और इसलिए लोगों से प्यार करना उसके लिए आसान है। लेकिन आप अपने-आपको सही समझते हैं और इसलिए लोगों के साथ प्रेम करना आपके लिए कठिन है। लेकिन जो बहुत प्रेम करता है, उसके सब गुनाह माफ हो जाते हैं।"

: १४ :

जीवन-तत्त्व

एक दूसरे दिन की बात है। ईसा समरिया से होकर जा रहे थे। एक कुएँ पर बैठ गये। इस बीच उनके शिष्य नगर में रोटी खरीदने चले गये। एक औरत गाँव से पानी लेने के लिए वहाँ आई और ईसा ने उसे पानी पिलाने

को कहा । उस औरत ने उनसे कहा, "क्यों पिलाऊँ, तुम यहूदी लोगों का हम समरियों से कोई वास्ता नहीं । फिर तुम मुझे पानी पिलाने के लिए कैसे कह सकते हो ?" ईसा ने उत्तर दिया, "अगर तुम मुझे और जो मैं उपदेश करता हूँ, उसे जानतीं, तो तुम ऐसा कभी न कहतीं, बल्कि मुझे पानी पिलातीं और मैं तुम्हें जीवन का तत्त्व बतलाता ।"

वह औरत ईसा की बात को नहीं समझी और बोली, "तुम्हें यहाँ दूसरी जगह कहाँ पानी मिलेगा ? यहाँ हमारे पिता जैकब के इस कुएँ के पानी के सिवा कहीं पानी नहीं है ।"

ईसा ने उससे कहा, "जो कोई इस कुएँ का पानी पियेगा, वह दोबारा भी पीना चाहेगा, लेकिन जो-कोई मेरे दिये पानी को पी लेता है, वह हमेशा के लिए संतुष्ट हो जायगा और वह उसमें से दूसरों को भी पिलायगा ।"

उस औरत ने समझा कि ईसा दैवी बातों की चर्चा कर रहे हैं । वह बोली, "लेकिन मैं तो समरियावासी हूँ तुम यहूदी हो । इसलिए तुम मुझे शिक्षा नहीं दे सकते । हमारे लोग इस पहाड़ पर प्रार्थना करते हैं, और तुम यहूदियों का कहना है कि परमात्मा का घर केवल यरूसलम में है ।"

ईसा ने कहा, "ऐसा कहा ज़रूर जाता था, लेकिन अब वक्त आ गया है कि मनुष्य परमात्मा की पूजा इस पहाड़ पर या यरूसलम में नहीं करेंगे, न इस या उस जगह पर, बल्कि हर कोई उस परमात्मा की पूजा शक्ति और सत्य में करेगा । परमात्मा एक शक्ति है और शक्ति और सत्य में ही उसकी पूजा करनी होगी ।"

ईसा ने उस औरत से जो कहा उसे वह समझी नहीं,

और उसने उत्तर दिया, 'मैंने सुना है कि परमात्मा का दूत आयगा और तब हर बात साफ हो जायगी।'

ईसा ने कहा, "भली औरत, जो मैंने बताया है उसे समझने की कोशिश कर और इससे ज्यादा की इंतज़ार मत कर।"

: १५ :

अमल करो

ईसा ने अनेक नगरों और ग्रामों में उपदेश किये, और उसने अपने शिष्यों को उन जगहों में भेजा, जहाँ उनकी जाने की इच्छा थी। उन्होंने उनसे कहा :

"बहुत से लोग वास्तविक जीवन के वरदान को नहीं जानते। मुझे उन सबपर दया आती है और मेरी इच्छा है कि जो मैं जानता हूँ, उन्हें बतलाऊँ। जिस प्रकार एक किसान अपने खेत का अकेला ही प्रबंध नहीं कर सकता, बल्कि फसल-कटाई के लिए मज़दूरों को बुलाता है, इसी तरह मैं भी बुलाता हूँ। भिन्न-भिन्न नगरों में जाओ और प्रभु-राज्य के बारे में जो उपदेश हैं उनकी सब जगह चर्चा करो। लोगों को प्रभु-राज्य के आदेश बतलाओ और हर बात में उन आदेशों का खुद भी पालन करो।

"मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच एक भेड़ के समान भेज रहा हूँ। साँपों के समान अक्लमंद और फाख्ता की तरह पवित्र बनो। सबसे पहले अपना निजी सामान कुछ भी न रखो, अपने साथ कुछ भी न लो—न थैला, न रोटी, न धन। केवल तन पर कपड़े और पाँव में जूते हों। लोगों के बीच भेदभाव मत करो।

अपने ठहरने के लिए किसी मकान को चुनो नहीं, बल्कि जो मकान पहले पड़े उसीमें ठहर जाओ। जब आप उसमें दाखिल हों, तो उसमें रहनेवालों को नमस्कार करो। यदि वे आपका स्वागत करें तो भीतर जाओ, नहीं तो अगला मकान देखो।

"लोग आपकी बातों को सुनकर आपसे नफरत करेंगे और हमला करेंगे। वे एक से दूसरी जगह आपको खदेड़ेंगे, लेकिन निराश होने जैसी कोई बात नहीं। जब आपको एक गाँव से खदेड़ दिया जाय तो दूसरे में जाओ। वहाँ से भी निकाल दें तो तीसरे में जाओ। जिस प्रकार भेड़िए भेड़ का पीछा करते हैं, आपका पीछा किया जायगा। आपको पीटा जायगा और आपको शासकों के सामने पेश किया जायगा ताकि आप अपने-आपको न्यायपूर्ण सिद्ध कर सकें। जब आप न्यायाधीशों और शासकों के सामने पेश किये जायं, तो जो-कुछ आप कहने जा रहे हों, उसके बारे में सोचो नहीं, बल्कि आपको मालूम होना चाहिए कि आपके भीतर परमात्मा की शक्ति वास करती है और जो आवश्यक होगा वही वह कहेगा।

"लोग आपके तन को मार सकते हैं; लेकिन आपकी आत्मा का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। इसलिए मनुष्यों से डरो नहीं। अगर आप परमात्मा की इच्छा को पूरा नहीं करते तो अपने तन के साथ अपनी आत्मा की हत्या करने से ही डरो। इसीसे आपको डरना चाहिए। परमात्मा की इच्छा के बिना चींटी भी नहीं मरती। उसकी इच्छा के विना आपके सिर का एक बाल भी बांका नहीं हो सकता, और अगर आप उसकी रखवाली में हैं, तो आपको डर किसका है?"

: १६ :

आत्मा अमर है

जिन शिष्यों को ईसा ने भेजा था वह तो एक ओर चले गये और ईसा दूसरे शिष्यों के साथ ग्रामों और बस्तियों से निकलते हुए दूसरी ओर चले गये । एक बार वे एक गाँव में पहुँचे । वहाँ मार्था नाम की एक स्त्री ने उन्हें अपने घर पर आमंत्रित किया । वे उसके घर में गये और भीतर जाकर उन्होंने उपदेश करना शुरू कर दिया । मार्था की बहन मेरी उनके चरणों में बैठकर उपदेश सुनने लगी । इस बीच मार्था भोजन की तैयारी करने में व्यस्त हो गई ।

मार्था ने देखा कि उसकी बहन ईसा के चरणों में बैठी उनके उपदेशों को सुन रही है तो वह ईसा के पास आई और बोली, "मैं अकेली ही सारा काम कर रही हूँ और मेरी बहन बैठी-बैठी आपके उपदेश सुन रही है ! उससे कहिये कि वह उठे और मेरे साथ काम करे ।"

यह सुनकर ईसा ने कहा :

"मार्था, तुम बड़ी व्यस्त हो और कितनी ही बातों की तुम्हें चिंता है, लेकिन केवल एक ही चीज़ तो आवश्यक है । मेरी ने उसी एक आवश्यक वस्तु को चुन लिया है । उसे कोई भी उससे नहीं ले सकता । सच्चे जीवन के लिए आत्मा के भोजन की दरकार होती है, शरीर के भोजन की नहीं ।"

और इसके बारे में उन्होंने एक मिसाल दी :

"एक बार एक आदमी के खेत में बहुत अच्छी फसल हुई । उसने सोचा, अब तो मैं अपने खलिहानों को फिरसे बनाऊँगा

और वे पहलों से बड़े भी होंगे । अपना सारा सामान जमा करके मैं उनमें रखूँगा । मैं अपनी आत्मा से कहूँगा, 'ओ मेरी आत्मा, अब तो मेरे यहाँ हर वस्तु की बहुतायत है । सुख से रहो, खाओ, पियो और मौज की ज़िंदगी बसर करो ।" लेकिन परमात्मा ने उससे कहा, "अरे मूर्ख, आज ही रात को तुम्हारी आत्मा तुमसे छीन ली जायगी और जो-कुछ तुमने जमा किया है दूसरों का हो जायगा ।

"यही दशा उन सबकी होती है, जो शारीरिक जीवन की तैयारियाँ करते हैं और आत्मा के लिए नहीं जीते ।

"जो अपनी निजी इच्छा को तजकर हमेशा परमात्मा की इच्छानुसार चलता है, उसीका जीवन वास्तविक जीवन है; लेकिन जो अपने शारीरिक जीवन की चिंता करता है, वह अपने वास्तविक जीवन को नष्ट कर लेता है ।"

: १७ :

आत्मिक जीवन

ईसा ने एक बार कुछ लोगों को चर्चा करते सुना कि किस प्रकार पाइलेटों ने कुछ गलीलियों को मार डाला और साथ ही किस प्रकार एक मीनार गिरी और उससे अठारह आदमी कुचल गए । तब ईसा ने लोगों से कहा :

"क्या आप यह समझते हैं कि वे आदमी किसी बात के लिए ख़ासतौर पर दोषी थे ? नहीं, हम सब जानते हैं कि वे हम लोगों की निस्बत कोई बुरे नहीं थे । जो-कुछ उनके साथ बीती वह किसी भी क्षण हमारे साथ बीत सकती है । हम सब आज अथवा कल ही मर सकते हैं । हम मौत से बच

नहीं सकते, इसलिए अपने साँसारिक-जीवन के लिए हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। हम मानते हैं कि जल्दी ही इसका अंत हो जायगा। हमें उसकी चिन्ता करनी चाहिए कि जो मरता नहीं, और वह है आत्मिक जीवन।"

उन्होंने इस बात को एक मिसाल देकर समझाया :

"एक मालिक के बाग में सेब का एक पेड़ था, जिसपर कभी फूल नहीं लगे थे। उसने अपने माली से कहा, 'अब की मैं तीन बरस बाद आया हूँ। आशा थी कि यह पेड़ फल गया होगा, लेकिन आश्चर्य है कि अभी तक इस पर फल नहीं आये। इसे तो अब काट ही देना चाहिए, क्योंकि बेकार इसने जगह घेर रखी है।' लेकिन माली ने कहा, 'मालिक, हमें कुछ दिन और प्रतीक्षा कर लेनी चाहिए। मैं इसके चारों ओर गड्ढा खोदकर उसमें खाद डालूँगा। शायद अगली गरमियों में फल जाय। अगर अगले बरस भी फल नहीं देगा तो इसे काट दिया जायगा।'

"यही हालत हमारी है। जब हम केवल तन में ही रहते हैं और आत्मिक शक्ति को फलने नहीं देते तो हमारा स्वामी हमें काटता नहीं, हमें मृत्यु का ग्रास नहीं बनाता; क्योंकि वह हमसे फल, अर्थात्, आत्मिक जीवन की आशा करता है। लेकिन यदि हम फलते नहीं तो हम विनाश से बच नहीं सकते। इस बात को समझने के लिए कोई अक्लमंदी की ज़रूरत नहीं। हर कोई स्वतः ही इसका अनुभव कर सकता है; क्योंकि हम न केवल घरेलू मामलों के बारे में, बल्कि कुदरत की बातों के विषय में भी तर्क करना जानते हैं और अनुमान कर सकते हैं कि क्या होगा। जब हवा पश्चिम से चलती है, हम कहते

हैं कि वर्षा होगी; जब दक्षिणी हवा चलती है तो हम कहते हैं कि मौसम अच्छा होगा, और यही होता है। यह कितने आश्चर्य की बात है कि हम मौसम को तो पहले से ही बता सकते हैं, लेकिन हम पहले से यह नहीं कह सकते कि हम सबको कब मरना होगा ? हमें अपने नाशवान सांसारिक-जीवन की नहीं, बल्कि अमर आत्मिक-जीवन की रक्षा करनी होगी।"

: १८ :

कर्म ही प्रधान है

एक और अवसर पर ईसा ने एक मिसाल देकर लोगों को समझाया कि मनुष्य का जीवन कैसा है। उन्होंने कहा :

"एक अमीर आदमी था। एक बार उसे घर से बाहर जाना पड़ा। रवाना होने से पहले उसने अपने दासों को बुलाया और उन्हें दस पौंड चाँदी दी। हरएक को एक-एक पौंड देकर उसने कहा, 'जितने दिन मैं बाहर रहूँ तुममें से हरएक को मेरी दी हुई चांदी से काम करते रहना चाहिए।' इतना कह-कर वह अपनी यात्रा पर चल पड़ा। जब वह चला गया तो दासों को आज़ादी मिल गई। वे मनमानी करते रहे। लेकिन जब मालिक लौट कर आया तो उसने दासों को बुलाया और प्रत्येक से पूछा कि उसने चांदी से क्या-क्या काम किया है। पहला आया और बोला, 'आपकी एक पौंड चांदी से मैंने दस पौंड चांदी की कमाई की है।' मालिक ने उससे कहा, 'भलेमानस, तुमने बहुत अच्छा काम किया। तुमने एक छोटी-सी वस्तु के लिए ईमानदारी प्रकट की है, इसलिए अब मैं तुम्हें बड़ी वस्तुओं के प्रबंध की ज़िम्मेदारी सौंपूंगा। अब

से तुम भी मेरे ही समान हो और मेरी सारी सम्पत्ति के भागीदार हो।'

"दूसरा दास आया और बोला, 'मालिक, आपकी एक पौंड चांदी से मैंने पाँच पौंड चांदी कमाई है।' मालिक ने उससे कहा, 'तुमने बहुत ठीक किया है। तुम भी मेरी ही तरह मेरी सारी जायदाद के भागीदार हो।'

"इसके बाद तीसरा दास आया और बोला, 'मालिक, यह लीजिए अपनी एक पौंड चांदी। मैंने एक रूमाल में लपेटकर इसे संभालकर रखा था, क्योंकि मैं आपको जानता हूँ कि आप बहुत ही सख्त आदमी हैं। जहाँ आप कुछ भी रखते नहीं, वहाँ से आप लेते हैं, और जहाँ आप कुछ बोते नहीं वहाँ से आप काटते हैं, तो मुझे तो आपका बहुत ही डर था।' मालिक ने कहा, 'अरे मूरखचंद, मैं तुम्हारे ही शब्दों से तुम्हारा न्याय करूँगा। तुम कहते हो कि मेरे डर के कारण तुमने मेरी चाँदी को रख छोड़ा और उसका उपयोग नहीं किया। अगर तुम यह जानते थे कि मैं बड़ा सख्त आदमी हूँ और वहाँ से भी लेता हूँ जहाँ मैंने कुछ रखा नहीं तो फिर तुमने मेरे हुक्म के अनुसार क्यों नहीं किया? अगर तुमने मेरी चांदी का उपयोग किया होता तो मेरी संपत्ति की वृद्धि होती और तुमने मेरे कहे हुए को पूरा किया होता। लेकिन अब तो तुमने वही काम नहीं किया, जिसके लिए मैंने तुम्हें चाँदी दी थी, इसलिए वह तुम्हारे पास नहीं रहेगी।'

"मालिक ने उन्हें आज्ञा दी कि जिसने चांदी का उपयोग नहीं किया, उससे चांदी ले ली जाय और उसने वह

चांदी उन लोगों को दे दी, जिन्होंने उसका बढ़िया उपयोग किया था। इसपर नौकरों ने मालिक से कहा, 'मालिक, उनके पास तो पहले ही बहुत है।' लेकिन मालिक ने कहा, 'जिन्होंने उससे बहुत कमाई की है, उन्हींको दे दो, क्योंकि जो दिये हुए का उपयोग करते हैं, उन्हें अधिक मिलेगा। जो उसका उपयोग नहीं करते, उनसे प्रत्येक वस्तु छीन ली जायगी।'

"यही अवस्था मनुष्य-जीवन की है," ईसा ने कहा। "अमीर मालिक परमात्मा है। मनुष्य उसके दास हैं। मनुष्य में परमात्मा की जो शक्ति है, वह है चांदी। जिस तरह मालिक ने खुद अपनी चांदी से कोई काम नहीं लिया और उसने हरएक को सौंपी हुई चांदी से काम करने का आदेश किया, इसी तरह परमात्मा ने मनुष्यों को अपनी शक्ति प्रदान की है और आदेश किया है कि वे अपने भीतर उसकी वृद्धि करें और जो-कुछ उन्हें दिया गया है उसका उपयोग करें। अक्लमंद आदमी समझते हैं कि आत्मिक-जीवन उन्हें परमात्मा की इच्छा पूरी करने के लिए दिया गया है और वे अपने अन्दर आत्मिक-जीवन की वृद्धि करते हैं और परमात्मा की शक्ति के भागीदार बन जाते हैं। लेकिन, मूर्ख दास के समान, बुद्धिहीन लोग अपने शारीरिक-जीवन के नाश से डरते हैं और परमात्मा की इच्छानुसार नहीं बल्कि अपनी ही मर्जी से काम करते हैं। इसलिए वे सच्चे जीवन को खो बैठते हैं।

"ऐसे लोग जीवन-शक्ति को नष्ट कर लेते हैं, जो सब से ज्यादा कीमती है। जो कोई आत्मिक-शक्ति की बजाय शारीरिक-जीवन को असली जीवन समझता है, उससे बढ़कर

उसकी कोई भूल नहीं हो सकती। हर-किसी को जीवन-शक्ति के साथ एकाकार हो जाना चाहिए। जो उसके साथ एकाकार नहीं होता, वह उसके विरुद्ध है। हर-किसी को जीवन-शक्ति का अनुपालन करना चाहिए, निजी शरीर का नहीं।''

: १६ :

विकारों से बचो

एक दिन ईसा के पास कुछ बच्चे आये। उनके शिष्यों ने उन्हें भगाना शुरू कर दिया, लेकिन ईसा ने यह देखा तो बोले :

"तुम्हें बच्चों को वापस नहीं लौटाना चाहिए। बच्चों को भगाना नहीं चाहिए, बल्कि हमें उनसे सीखना चाहिए; क्योंकि वे वयस्क लोगों की अपेक्षा प्रभु-राज्य के अधिक निकट हैं। बच्चे बुरी-बुरी गालियों का प्रयोग नहीं करते, वे ईर्ष्या नहीं करते, व्यभिचार नहीं करते, कसमें नहीं खाते, किसी के साथ मुकदमेबाजी नहीं करते, और अपनी निजी जाति और दूसरी जातियों में किसी तरह का भेद-भाव भी नहीं करते। बड़े लोगों की निस्बत बच्चे 'स्वर्ग के राज्य' के अधिक निकट हैं। किसी को भी बच्चों को नहीं खदेड़ना चाहिए, बल्कि इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे प्रलोभन में न फँसें।

"प्रलोभन कल्याण और अच्छाई का जामा पहनकर मनुष्यों को बहुत ही बुरे-बुरे काम करने के कारण बनकर उन्हें नष्ट कर देते हैं। यदि मनुष्य प्रलोभन में फँसता है तो वह अपने शरीर और अपनी आतमा दोनों का ही नाश करता है। इसलिए प्रलोभन में फँसने की बजाय शारीरिक यातना

सहन करना बेहतर है। जिस प्रकार एक लोमड़ी अपने पंजे को जाल में फँसा लेने पर छुटकारे के लिए उसे नोचती है, इसी तरह हर मनुष्य के लिए यह कहीं बेहतर है कि वह प्रलोभनों के आगे झुकने की बजाय अपने शरीर की यातना को सहन करे। बुराई का आदी बनने और उसे निरंतर बढ़ने देने के बजाय न केवल एक हाथ या एक पाँव को ही, बल्कि समूचे शरीर तक को मार डालना बेहतर है। प्रलोभनों से संसार में दुख उत्पन्न होते हैं। दुनिया में सारी बुराइयों की जड़ प्रलोभन है।"

: २० :

सबसे बुरा क्रोध

ईसा ने यह भी कहा कि सब प्रलोभनों में क्रोध सबसे बुरा है।

"एक मनुष्य अपने भाई से उसके गुनाहों के लिए क्रोध करता है और सोचता है कि क्रोध करने से वह अपने भाई को उसके गुनाहों से मुक्त कर सकता है। लेकिन वह भूल जाता है कि हममें से एक भी ऐसा नहीं जो अपने भाई का न्याय कर सके, क्योंकि हममें से हरएक गुनाहों से भरा हुआ है और अपने भाई को ठीक करने से पहले हमें अपने-आपको ठीक करना होगा—अन्यथा हम अपने भाई की आँखों के एक छोटे-से तिल को तो देख लेंगे और अपनी आँखों के ताड़ की ओर ध्यान नहीं देंगे। इसी तरह अगर आपका यह विचार है कि आपके भाई ने बुरा काम किया है तो उसके साथ अकेले में बात कर सकने के लिए कोई समय और स्थान

निश्चित करो और उसके विरुद्ध जो-कुछ आपके मन में है, उसे प्यार से बताओ। अगर वह आपका दुश्मन होने की बजाय आपकी बातों पर ध्यान देता है तो वह आपका मित्र बन जायगा। लेकिन अगर वह आपकी बातों पर ध्यान नहीं देता, तो उसके लिए दुख प्रकट करो और उसे अकेला छोड़ दो।"

तब एक शिष्य ने पूछा, "लेकिन अगर वह मेरी बात नहीं सुनता और मेरा अपमान करता है तो भी क्या मुझे उसे माफ कर देना चाहिए ? अगर वह बार-बार मेरा अपमान करता है, तो क्या इतने पर भी मुझे उसे माफ कर देना चाहिए ?"

ईसा ने उत्तर दिया, "हमें न केवल बार-बार, बल्कि हमेशा उसे माफ कर देना चाहिए; क्योंकि जिस तरह हमारे पश्चाताप करने पर परमात्मा हमें हमारे सब गुनाहों के लिए माफ कर देता है, उसी तरह हमें भी अपने भाइयों को हमेशा माफ करना चाहिए।"

: २१ :

सम-भाव

इस बात को स्पष्ट करने के लिए ईसा ने उन्हें यह मिसाल दी :

"एक अमीर आदमी ने अपने कर्ज़दारों के साथ हिसाब करना शुरू किया। एक कर्जदार को उसके सामने पेश किया गया, जो एक हजार पौंड का उसका ऋणी था; लेकिन उसके पास चुकाने को एक कौड़ी भी नहीं थी। वह अमीर आदमी कर्जदार की जायदाद, उसके बीवी-बच्चों और खुद उस आदमी तक को नीलाम कर सकता था। लेकिन उस ऋणी ने दया की

याचना की और अमीर आदमी को उसपर तरस आ गया। उसने उसका सारा ऋण माफ कर दिया। जब उसे माफी दे दी गई तो उसके पास एक गरीब आदमी आया। यह गरीब आदमी कुछ थोड़े-से का ही उसका कर्जदार था। उसने अपने ऋण को माफ कराना चाहा। लेकिन जिस कर्जदार को सारे कर्ज की माफी दी जा चुकी थी वह उस गरीब आदमी के ऋण को माफ नहीं करना चाहता था, बल्कि उसने उससे फौरन भुगतान की माँग की। तंग होने के कारण गरीब आदमी ने बहुत हाथ-पाँव जोड़े, पर उसने उसपर तरस नहीं खाया और उसे जेल भिजवा दिया। यह चर्चा सब जगह फैल गई, लोग उस अमीर आदमी के पास आये और उसे बतलाया कि उसके कर्जदार ने क्या किया है। इसपर अमीर आदमी ने अपने कर्जदार को वापस बुलाया, और बोला, 'तुम्हारे कहने पर मैंने तुम्हारा सारा ऋण माफ कर दिया था। तुम्हें भी मेरी ही तरह अपने कर्जदार का कर्जा माफ कर देना चाहिए था। लेकिन तुमने यह क्या किया है ?' इसके बाद उस अमीर आदमी ने अपने कर्जदार के खिलाफ भी मुकदमा दायर कर दिया।

"जो लोग हमारे प्रति दोषी हैं, हम अगर उन्हें दिल से माफ नहीं करते तो ऐसा ही कुछ हमारे साथ भी होता है। अपने भाई के साथ हमारा हर झगड़ा हमें बंधन में डालता जाता है और हमें परमात्मा से दूर-ही-दूर करता जाता है। इसलिए परमात्मा से दूर न हो जाने के लिए हमें अपने भाइयों को माफ कर देना होगा और सब मनुष्यों के साथ शांतिपूर्वक और प्रेमपूर्वक रहना होगा।"

: २२ :

पत्नी-व्रत-पालन

एक बार कुछ फरीसी ईसा के पास आये और उनसे पूछा कि अगर एक आदमी अपनी पत्नी को त्याग दे और दूसरी कर ले तो आपके क्या विचार हैं ? ईसा ने उत्तर दिया :

"आप जानते हैं कि केवल एक पिता-माता से ही एक बच्चे का जन्म हो सकता है। परमात्मा का यही नियम है और परमात्मा ने जो नियम बनाया है, उसे मनुष्य को भंग नहीं करना चाहिए। अगर एक आदमी परमात्मा के बनाये नियम को भंग करता है और अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी कर लेता है, तो वह तिहेरा गुनाह करता है—पहले तो वह अपने प्रति गुनहगार है, दूसरे अपनी पत्नी के प्रति, और तीसरे अन्य लोगों के प्रति। वह अपने-आपको हानि पहुँचाता है, क्योंकि वह अपने को विषय-वासना का आदी बनाता है। वह अपनी पत्नी को हानि पहुँचाता है, क्योंकि वह उसे त्यागकर उसे बुराई करने के लिए विवश करता है। वह दूसरे लोगों को हानि पहुँचाता है, क्योंकि वह उनके सामने व्यभिचार का उदाहरण उपस्थित करके उन्हें प्रलोभन देता है।"

तब शिष्यों ने ईसा से कहा, "केवल एक ही पत्नी के साथ जीवन बिताना तो बहुत कठिन है। अगर एक आदमी को मृत्यु-पर्यन्त एक स्त्री के साथ, यह सोचे बिना कि वह कैसी है, रहना ही होगा, तो सबसे अच्छा तो यह है कि ब्याह ही न किया जाय।"

ईसा ने उन्हें उत्तर दिया, "कोई चाहे तो ब्याह नहीं भी कर सकता। लेकिन अगर एक आदमी पत्नी के बिना रहना

चाहता है तो उसे सर्वथा पवित्र रहना होगा और स्त्रियों के बारे में सोचना भी नहीं होगा। अगर कोई आदमी ऐसा कर सकता है तो बहुत ही अच्छा है, लेकिन अगर कोई आदमी ऐसा जीवन न बिता सके तो उसे ब्याह कर लेना चाहिए और मृत्यु-पर्यन्त एक ही पत्नी के साथ रहना चाहिए--उसे अपने-आपको दूसरी स्त्रियों के साथ मोह-जाल में नहीं फँसने देना चाहिए।"

: २३ :

नियमों में दृढ़ता

एक दिन गिर्जाघर के लिए कर वसूली करने वाले पतरस के पास आये और उससे कहा, "क्या तुम्हारे स्वामी देनदारी का भुगतान करेंगे ?" पतरस ने कहा कि जरूर। ईसा ने यह सुन कर पतरस से पूछा, "तुम्हारी राय में, राजा करों को किससे वसूल करता है--अपने बेटों से या मुसाफिरों से ?" पतरस ने कहा, "मुसाफिरों से।" इसपर ईसा ने कहा, "अगर हम परमात्मा के पुत्र हैं तो हमें दशमाँश अदा करने की जरूरत नहीं। लेकिन मनुष्यों को प्रलोभन में न फँसने देने के लिए, उन्हें अदा कर दो, इसलिए नहीं कि हमपर यह देनदारी है, बल्कि इसलिए कि उन्हें प्रलोभन में न फँसने दिया जाय।"

एक दूसरे दिन की बात है कि कुछ फरीसियों ने बादशाह के अफसरों के साथ एक समझौता किया और वे ईसा के पास आये। उनकी कोशिश थी कि ईसा को उन्हींके शब्दों के आधार पर फाँसा जाय और उनको यह भी देखना था कि वह

बादशाह के प्रति अपनी जिम्मेदारी को मानता है या नहीं। उन्होंने ईसा से कहा, "तुम हर बात की सचाई के साथ शिक्षा देते हो। इसलिए हमें बताओ, क्या हमें बादशाह को कर अदा करने चाहिएं ?" ईसा ने कहा, "मुझे वह वस्तु दिखाओ जिसके द्वारा आप बादशाह को कर अदा करते हैं।" उन्होंने उन्हें एक सिक्का दिखाया। उस सिक्के पर बादशाह के सिर की मोहर लगी थी। ईसा ने उसकी ओर इशारा किया और कहा, "जो बादशाह का है, वह बादशाह को दो; लेकिन जो परमात्मा का है यानी आपकी आत्मा—वह सिवा परमात्मा के किसी दूसरे को मत दो। आपका धन, संपत्ति, काम—हर चीज जो कोई भी तुमसे मांगे, उसे दे दो; लेकिन परमात्मा के नियमों के जो विरुद्ध हो, वह किसी के लिए भी मत करो।"

: २४ :

नाश नहीं, रक्षा

एक दिन ऐसा हुआ कि ईसा के शिष्य एक गाँव में आये और उन्होंने रात वहीं बिताने की स्वीकृति चाही, लेकिन कोई भी उन्हें अपने घर में ठहराने को तैयार न था। तब शिष्य ईसा के पास आये और उन्हें इस बारे में बतलाते हुए बोले, "ऐसे नीच लोग यहाँ रहते हैं—वे तो इस काबिल हैं कि उन-पर बिजली गिरे और वे मर जायं।"

ईसा को यह सुनकर दुःख हुआ। वे बोले, "तुम लोग यह नहीं समझते कि तुम में कौन-सी शक्ति है। मैं इस बात की शिक्षा नहीं देता कि नाश कैसे किया जाता है, बल्कि यह कि लोगों को बचाया कैसे जाता है। यह कैसे हो सकता है

कि कोई अपने पड़ोसी के लिए बुरा सोचे ? हर आदमी में आप ही के समान परमात्मा की शक्ति का वास है और आपको अपने भीतर की उस शक्ति के लिए बुरा नहीं सोचना चाहिए।"

एक दूसरे समय में मती और फरीसी ईसा के पास एक औरत लाये, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी। उन्होंने उसे पेश करते हुए कहा, "मालिक, यह औरत व्यभिचार में पकड़ी गई है और हजरत मूसा के नियमानुसार ऐसी औरत को पत्थरों से मार डालना चाहिए। आपको इस विषय में क्या कहना है ?"

ईसा को ललचाने के लिए उन्होंने वैसा कहा था। अगर वे यह कहते कि उसे पत्थरों से मारना चाहिए तो ऐसा कहना उनके इस उपदेश के विपरीत होता कि सबके साथ प्रेम करो। लेकिन अगर उन्होंने यह कहा होता कि ऐसा नहीं करना चाहिए तो उनका यह कथन हजरत मूसा के नियम के विरुद्ध होता। जो हो, ईसा ने कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन गर्दन नीचे झुका ली और रेत में अपनी अंगुली से लिखने लगे।

उन्होंने दोबारा उनसे वही बात पूछी। तब उन्होंने सिर उठाया और बोले, "आप कहते हैं कि नियमानुसार उसे पत्थरों से मारना चाहिए—तो वैसा ही करो। लेकिन पहले उस आदमी को उसके पत्थर मारना होगा कि जो खुद बेगुनाह हो।" इतना कहकर उन्होंने फिर अपना सिर झुका लिया और फिर धरती पर लिखने लगे। ईसा की बात सुनकर शिकायत करने वाले एक-एक करके खिसकने शुरू हो गए और ईसा उस औरत के साथ वहाँ अकेले रह गये।

इसके बाद ईसा ने सिर उठाया और उस औरत के सिवा और किसी को न देखकर उन्होंने उससे कहा, "जान पड़ता है

कि किसी ने भी तुम्हें सजा नहीं दी ?" उसने उत्तर दिया, "किसी ने भी नहीं, प्रभु !"

"तो फिर मैं भी तुम्हें सज़ा नहीं देता," ईसा ने कहा। "जाओ, आइंदा गुनाह न करना।"

: २५ :

सहानुभूति और प्रेम

ईसा ने लोगों को शिक्षा दी कि सब मनुष्य परमात्मा की ही संतान हैं। इसलिए परमात्मा का आदेश है कि उसे और अपने पड़ोसी से प्रेम करो।

जब एक कानूनदां ने यह सुना तो उसने सोचा कि ईसा को उसीके शब्दों में झूठा साबित करना चाहिए। उन्हें यह जतलाने के लिए कि सब मनुष्य समान नहीं हैं, और यह भी कि भिन्न जातियों के मनुष्य समान रूप में परमात्मा के पुत्र नहीं हो सकते, उसने ईसा से पूछा, "आप हमें अपने पड़ोसी के साथ प्रेम करने की शिक्षा देते हैं। लेकिन मेरा पड़ोसी कौन है ?"

ईसा ने उसे एक मिसाल देकर उत्तर दिया :

"एक अमीर यहूदी था। एक बार ऐसा हुआ कि जब वह घर वापस आ रहा था तो उसपर चोरों ने हमला कर दिया। चोरों ने उसे पीटा, लूटा, और सड़क के किनारे छोड़ कर चल दिये। एक यहूदी पुरोहित उधर से निकला। उसने उस घायल आदमी को देखा, लेकिन वह रुका नहीं और आगे निकल गया। इसके बाद एक और यहूदी वहाँ से गुजरा और उसने भी घायल आदमी को देखा और

चला गया। इसके बाद दूसरी जाति का एक आदमी उस सड़क पर से निकला। वह समरिया का रहनेवाला था। उसने घायल आदमी को देखा और यह खयाल किये बिना कि यहूदी समरियावालों को अपना पड़ोसी नहीं समझते, बल्कि उन्हें विदेशी तथा शत्रु मानते हैं—उसने यहूदी पर तरस खाया, उसे उठाया और अपने गधे पर रखकर उसे एक सराय में ले गया। वहाँ उसने उसके घावों को साफ किया और मरहम-पट्टी की। उसके लिए सराय के मालिक को भाड़ा दिया और जब उसकी जरूरत न रही, तब वह वहाँ से गया।

"आप पूछते हैं, कौन किसका पड़ोसी है ?" ईसा ने कहा, "जिसके हृदय में प्रेम है वह प्रत्येक मनुष्य को अपना पड़ोसी मानता है, भले ही वह किसी भी जाति का क्यों न हो।"

: २६ :

बुराई से बुराई दूर नहीं होती

ईसा के उपदेश अधिकाधिक फैलते गए और फरीसी उससे उतने ही ज्यादा नाराज होते गए। उन्होंने लोगों से कहा, "उसकी बातें मत सुनो। वह तुमको धोखा दे रहा है। अगर तुम लोग उसके आदेशों पर चलोगे तो दुनिया में वर्तमान से भी ज्यादा बुराई हो जायगी।"

ईसा ने यह सुना और उन्होंने उनसे कहा :

"आप कहते हैं कि अगर मैं लोगों को यह शिक्षा देता हूँ कि धन-दौलत की चाह न करो, बल्कि गरीबी से रहो; क्रोध न करो, आँख के बदले आँख और दांत के बदले दांत की माँग न करो, बल्कि सब बातों को सहन करो और हरेक से

प्रेम करो। मैं भलाई के द्वारा बुराई को दूर करता हूँ और आप कहते हैं कि यदि लोगों ने मेरे उपदेशों पर अमल किया तो उनका जीवन पहले से भी ज्यादा बुरा हो जायगा। पुरानी बुराई की जगह एक नई बुराई हो जायगी। यह सच नहीं है। मैं एक बुराई की जगह दूसरी बुराई नहीं पैदा करता; लेकिन आप लोग हैं कि जो बुराई को बुराई से खदेड़ना चाहते हैं। आप लोग बुराई का नाश धमकियों, फांसियों, कसमों और हत्याओं से करना चाहते हैं। लेकिन तब भी बुराई का नाश नहीं हो पाता। यह इस तरह नष्ट भी नहीं हो सकती, क्योंकि कोई भी शक्ति अपने-आपको नष्ट नहीं कर सकती। मैं ऐसे साधनों से बुराई को दूर नहीं करता, जिनका आप उपयोग करते हैं। मैं अच्छाई से बुराई का नाश करता हूँ। मैं मनुष्यों को उन आदेशों पर अमल करने का आह्वान करके बुराई का नाश करता हूँ, जो उन्हें सब बुराइयों से बचायंगे।"

: २७ :

आध्यात्मिक जीवन

एक दिन ईसा के पास उसकी माँ और उसके भाई आये। ईसा के चारों ओर इतने लोग थे कि वे उनतक नहीं पहुँच सकते थे। एक आदमी ने इस बात को देखा और वह ईसा के पास आया, बोला, "आपके सम्बन्धी—आपकी माँ और आपके भाई—बाहर खड़े हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।"

ईसा ने कहा, "जो परम-पिता की इच्छाको जानते हैं और उसकी इच्छा का पालन करते हैं, वे ही मेरी माँ और मेरे भाई हैं।

"हर आदमी के लिए अपने पिता, अपनी माँ, अपनी पत्नी अपने बच्चों, अपने भाइयों, अपनी बहनों, अपनी सारी जायदाद अथवा अपने शारीरिक जीवन तक से परम-पिता की इच्छा अधिक महत्त्वपूर्ण होनी चाहिए।

"सांसारिक मामलों में हर समझदार आदमी कोई काम करने से पहले इस बात का हिसाब लगा लेता है कि जो कुछ वह करने जा रहा है उससे उसे लाभ भी होगा या नहीं? अगर वह लाभदायक है तो उसे करता है। अगर नहीं तो उसे नहीं करता। अगर एक आदमी मकान बनाना चाहता है तो वह शुरू करने से पहले यह विचार करता है और गिनती करता है कि उसे कितने रुपये की आवश्यकता होगी। उसके पास कितने रुपये हैं? मकान पूरा करने के लिए काफी होंगे या नहीं? ऐसा तो नहीं होगा कि जो मकान शुरू किया वह पूरा ही न हो और शक्ति और समय बर्बाद हो। इसी तरह हर बादशाह, अगर वह लड़ाई करना चाहता है, पहले यह सोचता है कि दस हजार आदमियों से वह बीस हज़ार आदमियों के साथ लड़ सकता है या नहीं। अगर वह हिसाब लगाता है कि वह नहीं लड़ सकता तो सुलह के लिए दूत भेज देता है और लड़ता नहीं।

"इसी तरह हर आदमी को यह समझ लेना चाहिए कि जिस सब-कुछ को वह अपना समझता है—अपना परिवार, अपनी जायदाद और अपना खुद का शारीरिक जीवन—वह आज या कल उससे छिन जायगा और एक वस्तु जो उसकी अपनी है और जो कभी भी उससे नहीं छिनेगी, वह है उसका आध्यात्मिक जीवन और केवल उसी की वह चिंता कर सकता

है और उसे करनी भी चाहिए।"

यह सुनकर एक आदमी बोला, "यह तो ठीक ही है कि आध्यात्मिक जीवन होना चाहिए, लेकिन यह मुनासिब कैसे हो सकता है कि हम सर्वस्व ही त्याग दें और इस तरह का जीवन ही न रहे ?"

ईसा ने उत्तर दिया :

"हर कोई जानता है कि आध्यात्मिक जीवन का अस्तित्व है और केवल यही नहीं मरता है। आप सब इसे जानते हैं, लेकिन जो आप जानते हैं, उसपर अमल नहीं करते—इसलिए नहीं कि आप उसपर सन्देह करते हैं, बल्कि इसलिए कि आप झूठी चिंताओं के कारण वास्तविक जीवन से विमुख हैं।"

और उन्होंने उन्हें यह कथा सुनाई :

"एक मालिक ने एक भोज देने की तैयारी की। उसने महमानों को न्यौता देने के लिए अपने नौकरों को भेजा, लेकिन महमानों ने आने से इन्कार कर दिया। एक ने कहा, 'मैंने कुछ जमीन खरीदी है, इसलिए मुझे वहाँ जाना है।' दूसरे ने कहा, 'मैंने कुछ जानवर खरीदे हैं और मुझे खेतों में हल चलाना है।' तीसरे ने कहा, 'मैंने ब्याह किया है, और आज मेरा विवाह-भोज है।' नौकर खाली लौट आये और उन्होंने मालिक को बताया कि कोई नहीं आयगा। इसके बाद मालिक ने भिखारियों को न्यौतने के लिए भेजा। भिखारियों ने आने से इन्कार नहीं किया और उन्होंने दावत खाई।

"इसी तरह, जब मनुष्य शारीरिक चिंताओं से मुक्त होते हैं, तभी वे आध्यात्मिक जीवन को जान सकते हैं।"

: २८ :

अच्छा जीवन

एक बार एक नौजवान ईसा के पास आया और उनके सामने घुटने टेककर बोला, "मेरे अच्छे मालिक, मुझे बताओ, अमर-जीवन प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना होगा।"

ईसा ने उत्तर दिया, "तुम मुझे अच्छा क्यों कहते हो ? सिवा परमात्मा के कोई अच्छा नहीं। तुम उसके सब आदेशों को जानते हो। उनपर अमल करो।"

नौजवान ने पूछा, "कौन से आदेशों का ? आदेश तो बहुत-से हैं।"

ईसा ने उत्तर दिया, "हत्या न करो, व्यभिचार न करो, झूठ न बोलो, चोरी न करो, किसी का जी न दुखाओ और अपने माँ-बाप की इज्जत करो।"

उस आदमी ने कहा, "बचपन से ही मैं इन आदेशों पर अमल करता आया हूँ।"

ईसा ने उसकी ओर देखा और उन्हें वह भला लगा। उन्होंने कहा, "अब भी तुममें एक बात की कमी है। जाओ, अपना सबकुछ बेच डालो और उसे गरीबों में बाँट दो।"

नौजवान को यह सुनकर दुःख हुआ और वह बिना जवाब दिये चला गया, क्योंकि वह बहुत अमीर था।

ईसा ने अपने शिष्यों से कहा :

"तुम देखते हो कि एक अमीर आदमी के लिए 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश करना कितना मुश्किल है !" ये शब्द सुनकर शिष्यों को निराशा हुई, लेकिन ईसा ने उन्हें दोहराया और कहा, "हाँ, बच्चो, अमीर आदमी के लिए प्रभु-राज्य में

दाखिल होना बेहद मुश्किल है।

"एक ऊँट का सुई के छेद में से निकलना सहज है; लेकिन एक अमीर के लिए 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश करना आसान नहीं।" ये शब्द सुनकर उन्हें और भी निराशा हुई, और उन्होंने, परस्पर कहा "अगर एक आदमी के पास कुछ भी न हो तो वह क्यों-कर जिन्दगी बसर करेगा ? वह जड़ हो जायगा और भूखों मरेगा।" लेकिन ईसा ने कहा, "केवल भौतिक मनुष्य को ही यह डरावना लगता है, लेकिन आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए यह सहज है। जो इसपर यकीन करेगा और अमल करेगा, उसे पता हो जायगा कि यह सच है।"

: २९ :

स्वर्ग और नरक

ईसा ने यह भी कहा, "आप एक ही वक्त में दो मालिकों—परमात्मा और दौलत की सेवा नहीं कर सकते। अर्थात् परमात्मा की इच्छा और अपनी निजी इच्छा एक साथ नहीं साध सकते। आपको दोनों में से एक को चुनना होगा और दोनों में से एक की सेवा करनी होगी।"

फरीसियों ने, जो दौलत को प्यार करते थे, यह सुना। वे ईसा के इन शब्दों पर हँसे। ईसा ने उनसे कहा, 'आप समझते हैं कि आप दर-असल इज्जत के काबिल हैं, क्योंकि मनुष्य आपकी दौलत के कारण आपकी इज्जत करते हैं ?

"ऐसा नहीं है, परमात्मा बाहरी वस्तुओं को नहीं देखता, बल्कि वह तो जो दिल में है उसे देखता है। मनुष्य जिन वस्तुओं को बहुमूल्य समझता है, परमात्मा की नजर में वे

मूल्यहीन हैं। 'स्वर्ग के राज्य' में अमीर नहीं, बल्कि गरीब प्रवेश पाते हैं।"

ईसा जानते थे कि फरीसियों का यह विश्वास है कि मृत्यु के बाद कुछ लोग नरक में जाते हैं और कुछ स्वर्ग में, उन्होंने दौलत के बारे में उन्हें यह मिसाल दी :

"एक आदमी था, जो बेहद अमीर था। वह खूब खाता-पीता, बढ़िया-से-बढ़िया कपड़े पहनता, और हररोज मौज करता। उसी जगह एक अपाहिज भिखारी रहता था, जिसका नाम लाजरस था। लाजरस अमीर आदमी के सहन में इस आशा से आया कि उसे उसके भोजन की बचीखुची झूठन मिल जायगी। लेकिन उसे कुछ भी न मिला, क्योंकि अमीर आदमी के कुत्ते झूठन को चट कर गये थे और वे लाजरस के जख्मों को भी चाटते थे। वह अमीर आदमी और लाजरस दोनों मर गये और दोज़ख में पड़े। अमीर आदमी ने कुछ ही फासले पर अब्राहीम और उसके साथ अपाहिज लाजरस को देखा, वह बोला :

"परम-पिता अब्राहीम, मैं आपको कष्ट देने का साहस नहीं करता, लेकिन मैं आपके साथ अपाहिज लाजरस को देख रहा हूँ। वह मेरे फाटक के बाहर पड़ा रहता था। उसे मेरे पास भेजो और उसे अपनी अंगुली पानी में डुबो कर मेरा गला ठंडा करने दो, क्योंकि मैं आग में जला जा रहा हूँ।" लेकिन अब्राहीम ने कहा, "मैं लाजरस को लपटों में तुम्हारे पास क्यों भेजूं ? भौतिक संसार में जो कुछ तुम्हें चाहिए था, सब तुम्हारे पास था और लाजरस के पास सिवा दुःख के कुछ भी नहीं था। जो कुछ तुम कहो मैं करने को तैयार हूँ, लेकिन

यह नहीं कर सकता, क्योंकि तुम्हारे और हमारे बीच आवागमन नहीं ।" इसपर अमीर आदमी ने कहा, "परम-पिता अब्राहीम, अगर यह ऐसा ही है तो कम-से-कम लाजरस को मेरे घर ही भेज दो । मैं पाँच भाइयों को छोड़ आया था और मैं उनके लिए परेशान हूँ । उसे उनको बता आने दो कि दौलत से कितनी बुराइयाँ होती हैं, अन्यथा उन्हें भी मेरी ही तरह यातना सहनी पड़ेगी ।" अब्राहीम ने कहा, "वे यह जानते हैं । हजरत मूसा और सब नबियों ने इसकी चर्चा की है ।" अमीर आदमी ने उत्तर दिया, "इसपर भी अगर कोई मुर्दों में से उठकर उनके पास जाय तो यह अच्छा ही होगा । इससे उनको अपने-आप पर विचार करने का मौका मिलेगा ।" लेकिन अब्राहीम ने उत्तर दिया, "अगर वे हजरत मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो वे मुर्दों में से उठनेवाले किसी की भी नहीं सुनेंगे ।"

: ३० :

परमात्मा सर्वत्र है

इसके बाद ईसा गैलिली में गये और अपने माँ-बाप के साथ वहाँ रहे । जब यहूदियों की फसल-कटाई की दावत का दिन आया तो ईसा के भाई उसमें जाने के लिए तैयार हुए । उन्होंने ईसा से भी भोज में चलने को कहा । वे उनके उपदेशों में विश्वास नहीं करते थे । उनसे बोले, "तुम कहते हो कि यहूदियों की पूजा-विधि गलत है और तुम परमात्मा की पूजा के सही ढंग को जानते हो । अगर तुम दर-असल यह समझते हो कि दूसरों को जो पता नहीं उसे तुम जानते हो तो हमारे

साथ दावत में चलो। वहाँ बहुत-से लोग आये होंगे और तुम उन सबके सामने अपने उपदेशों का ऐलान कर सकोगे। अगर वे सब तुम्हारा यकीन कर लेंगे तो तुम्हारे शिष्यों को पता लग जायगा कि तुम ठीक हो। तुम अपने को छिपाते क्यों हो? तुम पूजा के सही ढंग को जानते हो, तो फिर सभी को वह ढंग बताओ!"

ईसा ने उनसे कहा, "हर बात के लिए एक समय होता है। मैं वक्त आने पर जाऊँगा।" इस तरह उनके भाई चले गए, लेकिन वे घर पर ही रहे।

दावत में बहुत-से लोग शामिल हुए थे। ईसा के उपदेशों के बारे में उनकी बहस होने लगी। कुछ कहते थे कि उसके उपदेश सच्चे हैं, दूसरे कहते थे कि उससे लोग महज परेशान होते हैं। जब आधी दावत हो चुकी तो ईसा खुद यरूसलम में आये और गिर्जाघर में गये। गिर्जाघर की ड्योढ़ी में गौएँ और बैल, भेड़ें और पिंजरों में बंद कबूतर आदि जानवर थे। वहीं रुपये-पैसों की दुकान लगाकर दुकानदार भी बैठे थे। इस सब की परमात्मा के सामने चढ़ावे के लिए आवश्यकता थी। लेकिन ईसा ने, गिर्जा में प्रवेश करते हुए और बहुत-से लोगों को वहाँ देखकर, सबसे पहले सारे पशुओं को गिर्जा से बाहर हाँक दिया और कबूतरों को उड़ा दिया। उन्होंने दुकानदारों की मेजें पलट दीं और उसके बाद लोगों से कहा:

"इसाइया नबी ने कहा था, 'परमात्मा का घर यरूसलम के गिर्जे में नहीं है, बल्कि भगवत्‌जनों का सारा संसार ही उसका घर है।' और जरमिया नबी ने भी कहा था, 'इस झूठी कहावत पर विश्वास मत करो कि यह 'अमरत्व' का घर

है। इस पर यकीन मत करो, लेकिन अपने जीवनों में परिवर्तन करो और झूठे तरीके से परीक्षा न करो, न मुसाफिर, विधवा, और अनाथ को दुख दो। बेगुनाहों का खून मत बहाओ और परमात्मा के घर में यह कहने के लिए मत जाओ, 'अब हम निडर होकर बुराई कर सकते हैं।' मेरे घर को चोरों का अड्डा मत बनाओ। मैं, परमात्मा, तुम्हारी बलियों से खुश नहीं होता। मैं एक-दूसरे के साथ तुम्हारे प्रेम को देखकर खुश होता हूँ।" समझ लो कि नबी के इन शब्दों का अर्थ यह है, "जब लोग एक-दूसरे के साथ प्रेम करते हैं तो उनकी यह सारी दुनिया ही जीवित गिर्जाघर है। हमें गिर्जा में ही परमात्मा की पूजा नहीं करनी, प्रत्युत उसकी शक्ति में वास करते हुए और अच्छे कर्मों द्वारा उसकी पूजा करनी है।"

सब लोगों ने उनके शब्दों को सुना और उनपर उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "बिना किसी प्रकार की शिक्षा के इन्हें इस सब का कैसे ज्ञान है?" ईसा को पता था कि हर कोई उनके शब्दों को सुनकर हैरान है। वह बोले, "मेरे उपदेश मेरे-अपने नहीं, लेकिन उसके हैं, जिसने मुझे भेजा है, क्योंकि जो उपदेशों की खुद रचना करता है, वह मनुष्यों से ख्याति चाहता है। जो उसकी इच्छाओं की खोज करता है, जिसने उसे भेजा है, वही सत्य है, और उसमें झूठापन नहीं होता। मैं तो आपको केवल यही उपदेश करता हूँ कि परमात्मा की इच्छा को पूर्ण करो। अगर आप परमात्मा की इच्छा पूरी करेंगे तो आपको मालूम हो जायगा कि जो मैं कहता हूँ उसकी मैंने खोज नहीं की, बल्कि ये उपदेश तो परमात्मा के ही हैं।"

बहुतों ने कहा "लोग कहते हैं वह झूठा नबी है, लेकिन यहाँ वह सब के सामने खुलेतौर पर बोला है और कोई भी उसके विरुद्ध कुछ भी नहीं कहता। केवल एक बात है जो हमें उसके मसीहा होने में विश्वास नहीं करने देती, और वह यह है : 'यह लिखा है कि जब मसीहा आयगा तो किसी को भी यह मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से आया है; लेकिन हम इस आदमी और उसके सारे परिवार को जानते हैं।'

इसके बाद ईसा ने उनसे कहा, "आप मुझे जानते हैं। और यह भी जानते हैं कि कहाँ से मैं इस शरीर में आया हूँ, लेकिन आप यह नहीं जानते कि आत्म-शक्ति में मैं कहाँ से आया हूँ। आप यह भी नहीं जानते कि किसके द्वारा मैं आत्म-शक्ति में आया हूँ, यद्यपि केवल वही परम-पिता है, जिसे जानने की आपको जरूरत है। अगर आपको बताया जाता कि मैं मसीहा हूँ तो आपको मुझ मनुष्य में विश्वास होता, लेकिन आपको परम-पिता में विश्वास नहीं, जोकि मुझमें और आपमें है। आपको केवल परम-पिता में ही विश्वास करना चाहिए।"

: ३१ :

सत्योपदेश से प्रकाश

बहुत से लोगों ने, यह सब देखकर और उनकी बातें सुन कर, कहा, "वह दरअसल ही नबी है।" दूसरों ने कहा, "यही मसीहा है।" लेकिन कुछ ने कहा, "क्या मसीहा गैलिली में जन्म ले सकता है ? धर्मग्रंथों में कहा गया है कि मसीहा बैथलेहम में, जहाँ दाऊद ने जन्म लिया था, दाऊद के बीज से

जन्म लेगा।"

ईसा के बारे में विवाद उत्पन्न हो गया और लोगों में हलचल पैदा हो गई।

इसके बाद राज-पुरोहितों ने ईसा को पकड़ने के लिए आदमियों को भेजा; लेकिन वे ऐसा करने का इरादा न कर सके। जब वे राज-पुरोहितों और फरीसियों के पास वापस आये तो उन्होंने उनसे पूछा, "तुम उसे लाये क्यों नहीं ?" उन्होंने उत्तर दिया : "इस आदमी के समान कभी किसी ने बातें नहीं कीं।"

फरीसियों ने उनसे कहा, "क्या तुम भी भटक गए हो ? शासकों और फरीसियों में से भी कोई क्या उसपर विश्वास करता है ? केवल शाप पाये हुए ही उसपर विश्वास करते हैं। वे कानून को नहीं जानते।"

वे सब अपने घर को लौट आये।

लेकिन ईसा जैतून के पहाड़ पर गये और अपने शिष्यों के साथ वहाँ उन्होंने रात बिताई। सबेरे वह फिर गिर्जे में आये। बहुत-से लोग उनकी बातें सुनने आये। उन्होंने उन्हें फिर यह शिक्षा दी, "मेरे उपदेश संसार को प्रकाश देते हैं। जो उनपर अमल करता है वह अन्धेरे में नहीं रहेगा, बल्कि वह साथ-साथ यह भी देखेगा कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। मैं हर आदमी को वही शिक्षा देता हूँ कि जो परम-पिता परमात्मा देते हैं, जिन्होंने मुझे भेजा है।"

उन्होंने उनसे पूछा, "तुम्हारे परम-पिता कहाँ हैं ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "अगर आप मुझे जानते हैं तो आप मेरे परम-पिता को भी जान जायंगे।"

उन्होंने उनसे पूछा, "तुम कौन हो ?"

उन्होंने कहा, "मैं वह शक्ति हूँ, जिसका न तो आदि था और न अन्त होगा। मैं मानव-पुत्र हूँ, लेकिन परमात्मा की शक्ति को ही मेरा पिता मंजूर करो। जब आप लोग अपने-आप में मानव-पुत्र को जागृत कर लेंगे तब आप जान जायंगे कि मैं कौन हूँ और समझ लेंगे कि मैं खुद-ब-खुद न कुछ करता हूँ और न कहता हूँ। मैं केवल वही करता और कहता हूँ, जो परम-पिता ने मुझे सिखाया है।"

: ३२ :

अमर जीवन

यहूदियों ने ईसा को घेर लिया और कहा, "ये सब जो तुम कहते हो समझना मुश्किल है और हमारे धर्म-ग्रंथों के साथ भी मेल नहीं खाता। हमें सताओ नहीं, साफ-साफ़ बतलाओ, "क्या तुम वही मसीहा हो, जिसे हमारे धर्मग्रंथों के अनुसार संसार में आना है?"

ईसा ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं पहले ही तुम्हें बता चुका हूँ कि मैं कौन हूँ, लेकिन तुम विश्वास नहीं करते। जो मैं कहता हूँ, उसपर अमल करो और तब तुम्हें मालूम हो जायगा कि मैं कौन हूँ और मैं क्यों आया हूँ। वह, जो मेरा अनुसरण करता है और जो मैं कहता हूँ उसपर अमल करता है—वह, जो मेरे उपदेशों को समझ लेता है और उन्हें पूरा करता है—मेरे और परम-पिता के साथ है। मैं और परम-पिता एक हैं।"

यहूदी इन शब्दों को सुनकर चिढ़ गए और उन्होंने उन्हें मार डालने के लिए पत्थर उठा लिये।

इसपर ईसा ने उनसे कहा, "आप लोग मुझे क्यों मार डालना चाहते हैं ?"

उन्होंने जवाब दिया, "इसलिए कि तुम, जो एक मनुष्य हो, अपने-आपको परमात्मा बताते हो।"

ईसा ने जवाब दिया, "मैंने कहा था कि मैं परमात्मा का पुत्र हूँ, और जब मैं परम-पिता की इच्छा का पालन करता हूँ तो मैं उसके साथ एकाकार हूँ। वह, जो अपने-आपको परमात्मा का पुत्र मानता है, दास नहीं रह जाता, और अजर-अमर जीवन प्राप्त कर लेता है। एक दास अपने मालिक के घर में हमेशा नहीं रहता, लेकिन मालिक के पुत्र सदा वहाँ रहते हैं। एक मनुष्य, जिसमें परमात्मा की शक्ति का वास है, परम-पिता में मिल जाता है और अमरत्व प्राप्त कर लेता है। मैं आप लोगों को सचाई से कहता हूँ कि जो मेरे शब्दों पर अमल करता है, वह कभी मरेगा नहीं।"

इसपर यहूदियों ने उनसे कहा, "अब हमें मालूम हो गया है कि तुम्हारे अंदर शैतान रहता है। अब्राहीम मर गया और सब नबी मर गए, इतने पर भी तुम कहते हो कि जो तुम्हारे शब्दों पर अमल करेगा वह कभी मरेगा नहीं। क्या तुम हमारे परम-पिता अब्राहीम से भी बड़े हो ?"

ईसा ने कहा, "मैं आपको सचाई से कहता हूँ कि अब्राहीम हुआ उससे भी पहले से मैं हूँ।"

ईसा परमात्मा की उस शक्ति के बारे में कह रहे थे, जो उनमें थी, हर आदमी में वास करती है और जिसका न आदि है और न अन्त, लेकिन वे उसे समझे नहीं।

यहूदी यह नहीं समझ सके कि उनका क्या किया जाय।

इससे उनको सजा भी नहीं दिला सकते थे। तब ईसा जॉर्डन नदी के उस पार चले गये और वहाँ रहने लगे।

: ३३ :

सेवा करो

एक बार, जब ईसा यरूसलम से लौट रहे थे, उनके शिष्यों में से दो, जेम्स और युहन्ना, उनके पास आये और बोले, "मालिक, हमें वचन दो कि जो हम कहेंगे वही आप करेंगे।"

ईसा ने कहा, "तुम क्या चाहते हो ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "आप ही के समान हमारा दर्जा हो जाय।"

ईसा ने कहा, "तुम लोग खुद नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो। हर कोई अपने निजी यत्नों से 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश कर सकता है, लेकिन कोई भी दूसरे के लिए यह नहीं कर सकता।"

तब ईसा ने अन्य शिष्यों को अपने पास बुलाया और कहा, "सांसारिक मनुष्य सोचते हैं कि कौन उनमें ऊँचा और कौन नीचा है ; लेकिन तुम लोगों को किसी को भी ऊँचा या नीचा नहीं समझना चाहिए। तुममें से जो अव्वल बनना चाहता है उसे अपने-आपको अंतिम मानना चाहिए ; क्योंकि यह परम-पिता की इच्छा है कि 'मानव-पुत्र' का जीवन सेवा कराने के लिए नहीं, बल्कि हरेक की सेवा करने के लिए होना चाहिए और उसे अपने शारीरिक जीवन का शक्ति के जीवन के लिए उत्सर्ग करना चाहिए।"

: ३४ :

सबको समान मिलेगा

इस विषय में ईसा ने उन्हें एक मिसाल दी। कहा :

"एक दिन एक मालिक बहुत सवेरे अपने अंगूर के बगीचे के लिए किराये पर मज़दूरों को लेने गया। एक शिलिंग प्रति-दिन मज़दूरी तय करके उसने उन्हें बगीचे में भेज दिया। इसके बाद नाश्ते के समय वह फिर बाहर गया और उसने कुछ और आदमी देखे, जिन्हें काम नहीं मिला था। उनसे वह बोला, 'तुम लोग भी मेरे बगीचे में जा सकते हो। जो ठीक होगा, तुम्हें दे दूँगा।' वे सब बगीचे में चले गए। उसने यही फिर दोपहर के खाने के समय, और दोपहर बाद भी किया। जब शाम हो चुकी तो उसने फिर बिना काम के आदमियों को देखा। उनसे उसने कहा, 'तुम लोग बिना काम के यहाँ दिन भर क्यों खड़े रहते हो ?' उन्होंने कहा, 'हमें किसी ने काम पर नहीं बुलाया। मालिक बोला, 'तुम भी मेरे बगीचे में चले जाओ और जो ठीक होगा तुमको दे दिया जायगा।'

"जब मज़दूरी देने का समय आया तो बगीचे के मालिक ने अपने मुनीम से कहा, 'सब मज़दूरों को बुलाओ और आखिर से शुरू करके पहले तक सबको समान मजूरी दे दो।' जो लोग शाम को आये थे उन्हें भी एक-एक शिलिंग मिल गया।

"जिन लोगों को पहले काम पर लगाया गया था उन्होंने सोचा था कि उन्हें ज्यादा मज़दूरी मिलेगी, लेकिन उन्हें भी एक-ही-एक शिलिंग मिला। इसके बाद जो पहले आये थे, वे बगीचे के मालिक पर यह कहते हुए बिगड़ने लगे, 'इन आदमियों ने केवल घंटे भर काम किया है, लेकिन हम लोगों

ने सुबह से लेकर सारा दिन काम किया, और आपने उन्हें भी हमारे ही बराबर बना दिया।'

"मालिक ने उनसे कहा, 'तुमको झींकना नहीं चाहिए। क्या तुमने एक शिलिंग पर काम करना मंजूर नहीं किया था? जो तुम्हारा वाजिब है, वह ले लो और जाओ। अगर मैं पहले के समान ही आखिरी को भी देना चाहता हूँ तो क्या मैं अपनी निजी इच्छा से वैसा कर नहीं सकता? मेरी दयालुता तुमको बुरी लगी है और तुम अपने भाइयों के साथ ईर्ष्या रखते हो। यह ठीक नहीं है।'

"यही हालत सब मनुष्यों की है। परमात्मा का इच्छित कार्य भले ही कोई जल्दी करे या देर में, मिलेगा सबको समान ही। जो पहले को मिलेगा वही आखिरी को भी।"

: ३५ :

पुनर्जीवन

ईसा ने एक और मिसाल देकर इसे स्पष्ट किया। उन्होंने कहा :

"एक आदमी के दो पुत्र थे। छोटा अपने पिता से अलग हो जाना चाहता था। वह बोला, 'पिताजी, मुझे जायदाद का मेरा हिस्सा दे दो।' उसके पिता ने वैसा ही किया। इसके बाद छोटे बेटे ने अपना हिस्सा लिया और विदेश चला गया। वहाँ उसने अपना सब-कुछ बर्बाद कर दिया और एकदम गरीब हो गया। वह इतना नीचे गिरा कि उसे सूअरों की देख-भाल करनी पड़ी। उसके पास सूअरों को दिये जानेवाले जैतून के फलों के सिवा कुछ भी खाने को नहीं

था। उसने अपनी जिन्दगी पर विचार किया और मन-ही-मन सोचा, 'अपने पिता को छोड़ना मेरी भूल थी। मेरे पिता के घर में हर चीज की बहुतायत थी, यहाँ तक कि उनके मजदूरों के खाने को भी काफी होता है, जबकि मैं यहाँ सूअरों का खाना खाता हूँ। बेहतर यही है कि मैं अपने पिता के पास चला जाऊँ, उनके चरणों में नत-मस्तक होऊँ और कहूँ—पिताजी, मैंने आपके साथ बड़ा भारी गुनाह किया है, मैं आपका पुत्र कहलाने योग्य नहीं हूँ। मुझे एक मजदूर की तरह अपने यहाँ रख लो।'

"यह विचारकर, वह अपने पिता के पास वापस गया। जब वह मकान के पास आया तो उसके पिता ने उसे देखा उससे मिलने के लिए बाहर गया और उसे अपनी छाती से लगाकर प्यार किया।

"पुत्र बोला, 'पिताजी, मैंने आपके साथ बड़ा अन्याय किया है। मै आपका पुत्र होने लायक नहीं हूँ।' पिता ने इन शब्दों का उत्तर न दिया; लेकिन उसने अपने नौकरों को बढ़िया कपड़े और जूते लाने की आज्ञा दी, और अपने पुत्र से उन्हें पहनने को कहा। उसने एक नौकर को मोटा-ताजा बछड़ा मारने की भी आज्ञा दी। जब सब कुछ तैयार हो गया तो पिता ने अपने घर के सब लोगों से कहा, 'मेरा यह पुत्र मर गया था, और अब पुनः जी गया है, वह खो गया था, अब मिल गया है। इस खुशी के उपलक्ष में हम यह भोज करते हैं।'

"जब सब खाने की मेज पर बैठ गए तो बड़ा बेटा खेतों पर से वापस आया। देखता क्या है कि घर में दावत हो रही

है। एक मजदूर को बुलाकर उसने पूछा, 'हमारे यहाँ दावत क्यों हो रही है?' मजदूर ने उत्तर दिया, 'क्या आपने सुना नहीं कि आपका भाई लौट आया है और आपके पिता खुशी मना रहे हैं।'

"बड़े भाई को यह बुरा लगा। वह मकान में दाखिल नहीं हुआ। लेकिन उसका पिता उसके पास बाहर आया और उसे बुलाया। इसपर भी बड़ा बेटा भीतर नहीं आया। उसने अपने पिता से कहा, 'कई बरसों तक मैंने आपके लिए काम किया और कभी आपकी आज्ञाओं का उल्लंघन नहीं किया। इतने पर भी आपने मेरे लिए तो मोटा-ताजा बछड़ा कभी नहीं मारा। लेकिन मेरा छोटा भाई घर छोड़ गया और उसने अपनी सारी सम्पत्ति पियक्कड़ों के साथ नष्ट कर दी, तब भी आप उसके लिए इतनी बड़ी दावत कर रहे हैं।'

"यह सुनकर पिता ने बड़े पुत्र को जवाब दिया, 'तुम हमेशा मेरे साथ रहे हो और जो मेरा है वह सब तुम्हारा है। लेकिन तुम्हें दुखी नहीं होना चाहिए, बल्कि खुश होना चाहिए कि तुम्हारा जो भाई मर चुका था, अब वह फिर जिन्दा हो गया है, खो जाने के बाद अब वह फिर मिल गया है।'

"परमात्मा इसी तरह सबका स्वागत करते हैं, जब वे परमात्मा के पास—जल्दी या देर में—वापस लौटते हैं और 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश करते हैं।"

: ३६ :

अन्तर्दृष्टि

एक दिन ईसा ने अपने शिष्यों से कहा, "मुझे बताओ कि लोग मेरे उपदेशों को कैसा समझते हैं।" उन्होंने जवाब

दिया, "कुछ का विचार है कि जॉन ने जो शिक्षा दी थी, वही आप देते हैं। दूसरे कहते हैं कि जो इसाइया ने सिखाया था वही आप सिखाते हैं। कुछ कहते हैं कि आपके उपदेश जरमिया जैसे हैं और आप नबी हैं।"

ईसा ने कहा, "ठीक, लेकिन तुम लोग मेरे उपदेशों को कैसा समझते हो ?"

साइमन पतरस बोला, "मेरे विचार में आप यह शिक्षा देते हैं कि प्रत्येक मनुष्य में परमात्मा की शक्ति विद्यमान है और इसलिए हर आदमी परमात्मा का पुत्र है।" ईसा ने उसे कहा, "साइमन, तुम खुशकिस्मत हो कि तुमने यह समझा। कोई भी आदमी तुम्हें यह नहीं दिखा सकता था; लेकिन तुमने जान लिया क्योंकि परमात्मा तुममें विद्यमान है। वह मैं नहीं हूँ जिसने अपने शब्दों से तुम्हें यह दिखाया है, बल्कि परमात्मा ने अपने-आप ऐसा किया है।"

इस बार ईसा ने अपने शिष्यों को बताया कि यरुसलम में वह उन लोगों के हमलों और अपमानों से नहीं बच सके, जो उनके उपदेशों में विश्वास नहीं करते। लेकिन अगर वे उन्हें मार भी डालते तो वे केवल उनके शरीर को ही मार डालते, परमात्मा की उस शक्ति को नहीं, जो उनमें वास करती है।

इन शब्दों को सुनकर पतरस को बहुत दुःख हुआ। उसने ईसा का हाथ पकड़ लिया और बोला, "अब से आप यरुसलम में न जाना।"

ईसा ने जवाब दिया, "ऐसा न कहो। अगर तुम मेरी तकलीफों और मृत्यु से डरते हो तो जान पड़ता है कि तुम दैवी इच्छा क्या है, इसे नहीं, बल्कि केवल मानवी इच्छा को

ही समझते हो। 'प्रभु-राज्य' के लिए जो लोग इस तरह का जीवन बिताते हैं उन्हें तकलीफें होंगी, क्योंकि संसार अपने निज को प्यार करता है और जो दैवी है उससे नफरत करता है। संसार के मनुष्यों ने हमेशा उन लोगों को दुखी किया है, जिन्होंने परमात्मा की इच्छा को पूरा किया।"

इसपर लोगों तथा अपने शिष्यों को बुलाकर ईसा ने कहा, "जो मेरे उपदेशों के अनुसार जीना चाहता है उसे अपने शारीरिक जीवन को त्याग देना चाहिए और तकलीफें सहने को तैयार हो जाना चाहिए, क्योंकि जो अपने शारीरिक जीवन के लिए भयभीत है वह अपना सच्चा जीवन खो देता है, लेकिन जो अपना शारीरिक जीवन उत्सर्ग कर देगा, वह अपने सच्चे जीवन को बचा लेगा। जो मेरे उपदेशों को पूरा करना चाहता है, उसे शब्दों में नहीं, बल्कि अमल में उन्हें पूरा करना होगा।"

इसके बाद उन्होंने यह मिसाल दी :

"एक आदमी के दो बेटे थे। पहले से उसने कहा, 'जाओ, मेरे बाग में काम करो।' पुत्र ने कहा, 'मैं नहीं जाऊँगा!' लेकिन बाद में वह पछताया और चला गया। पिता फिर दूसरे पुत्र के पास गया और उससे भी वही कहा। दूसरे बेटे ने जवाब दिया, 'मैं अभी जाता हूँ।' पर वह गया नहीं। दोनों में किसने अपने पिता की इच्छा को पूरा किया?"

शिष्यों ने कहा, "पहले ने।"

ईसा ने कहा, "और मैं आपको बताऊँ कि जो लोग चर्चा करते हैं, लेकिन अमल नहीं करते, कलाल और व्यभिचारी उनसे पहले 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश करेंगे।"

: ३७ :

फल की आशा न करो

अनन्तर शिष्यों ने ईसा से कहा, "आपकी शिक्षा काफी मुश्किल है। हमारे इस विश्वास में वृद्धि कीजिए कि अगर हम आपकी शिक्षा के अनुसार जीवन बसर करते हैं तो हमारा जीवन सुखी होगा।"

वह समझ गये कि वे यह जानना चाहते हैं कि नेक जीवन बिताने के बदले उन्हें क्या पुरस्कार मिलेगा।

ईसा ने उनसे कहा :

"पुरस्कारों में विश्वास करने से धारणा नहीं बनती। यह तो जीवन के विषय में स्पष्ट जानकारी का प्रश्न है। अगर आप स्पष्टतया समझते हैं कि आपका जीवन परमात्मा की शक्ति में है, तो आप किसी भी पुरस्कार की आशा नहीं करेंगे। कोई मालिक अपने नौकर के कर्तव्य-पालन पर उसे धन्यवाद नहीं देता। और एक नौकर, अगर वह समझता है कि वह एक नौकर है तो इससे परेशान नहीं होता, बल्कि अपना काम करता है और जानता है कि जो उसका वाजिब है, वह उसे मिलेगा ही। इसी तरह तुमको भी परमात्मा की इच्छा पूरी करनी चाहिए और समझना चाहिए कि तुम नौकर हो और कर्तव्य-पालन के बदले पुरस्कार की आशा नहीं करनी चाहिए, बल्कि जो मिले उसीमें संतोष करना चाहिए। हमें पुरस्कार पाने के लिए उत्सुक नहीं रहना चाहिए। हमें इस बात के लिए उत्सुक रहना चाहिए कि हम इस जीवन को, जो हमें परमात्मा की इच्छा पूर्ण करने योग्य बनाता है, नष्ट न करें। इसलिए उन नौकरों के समान सदा तैयार रहो, जो अपने

मालिक को आशाभरी नजर से देखते हैं। नौकरों को यह पता नहीं होता कि मालिक जल्दी या देर में लौटेगा, बल्कि उन्हें तो सदा ही तत्पर रहना होता है।

"और यही हालत इस जीवन की है। हमेशा और प्रति क्षण, हर किसी को परमात्मा की इच्छा पूरी करनी चाहिए, किसी को भी अपने-आपसे यह नहीं कहना चाहिए, 'मैं अमुक काम तब या वहाँ कर लूँगा।'

"इसलिए हमेशा उस शक्ति में और वर्तमान में ही वास करो। जीवन-शक्ति के लिए समय जैसी कोई वस्तु नहीं है। सदा सावधान रहो कि तुम चिंताओं के बोझ के नीचे न दब जाओ। अत्यधिक खान-पान या चिंताओं में न पड़ो और परमात्मा की शक्ति को ही सदा अपने पर शासन करने दो।"

: ३८ :

जीवन का लक्ष्य

इसके बाद ईसा ने उन्हें एक और मिसाल यह जताने के लिए दी कि लोगों को जीवन कैसे बिताना चाहिए। उन्होंने कहा :

"एक मालिक ने एक बाग लगाया, उसने उसे खोदा और संवारा। उसने बाग को यथासंभव अधिक-से-अधिक फल-प्राप्ति के योग्य बनाने के लिए सब-कुछ किया। फिर उसने मजदूरों को बाग में काम करने के लिए भेजा कि वे फल जमा करें और समझौते के अनुसार भुगतान करें। जब समय आया तो मालिक ने वसूली के लिए एक नौकर को भेजा; लेकिन मजदूर यह भूल गए थे कि बाग को उन्होंने नहीं लगाया और

संवारा भी उन्होंने नहीं । वे तब आये थे जब बाग तैयार था । सो उन्होंने मालिक के आदमी को खाली हाथ लौटा दिया और उस बाग में ऐसे रहने लगे, जैसे वे ही मालिक हैं। उन्होंने यह नहीं सोचा कि बाग उनका नहीं और वे मालिक की इजाजत से ही उसमें रहते हैं। इसपर मालिक ने मजदूरों को यह याद कराने के लिए अपने कारिन्दे को भेजा कि भुगतान का समय हो चुका है; लेकिन उन्होंने उसे भी भगा दिया। इसके बाद उसने अपने बेटे को भेजा। मज़दूरों ने सोचा कि अगर वे बेटे को मार डालते हैं तो वे खुद-ब-खुद मालिक बन जायंगे। यह सोचकर उन्होंने उसे मार डाला।

"तब मालिक क्या करता ? वह केवल उन मजदूरों को हटाकर उनकी जगह दूसरों को भेज सकता था।

"परमात्मा यह मालिक है, यह संसार बाग है, मनुष्य मजदूर हैं; आत्मिक जीवन भुगतान है; धर्मात्मा मनुष्य मालिक के दूत हैं, जो लोगों को याद कराते हैं कि उन्हें अपने शरीर के लिए नहीं, बल्कि आत्मा के लिए जीना चाहिए।

"जो लोग भटक गए हैं वे कल्पना करते हैं कि शारीरिक कल्याण के लिए ही उन्हें जीवन दिया गया है, परमात्मा की इच्छा-पूर्ति के लिए नहीं, और वे अपनी आत्म-शक्ति को मार डालते हैं और इस तरह अपने असली जीवन को खो देते हैं।"

: ३९ :

शिक्षक न बनो

इसके बाद ईसा फिर यरुसलम में आये और फरीसियों के बुरे जीवन के विषय में लोगों के सामने गिर्जे में बोले :

"स्क्रीबियों के उपदेशों से सावधान रहो, जो अपने को सच्चे धर्म का शिक्षक कहते हैं। उनसे सावधान रहो, क्योंकि उन्होंने असली शिक्षकों—नबियों की जगह ले ली है। उन्होंने स्वतः ही मनुष्यों को प्रभु-इच्छा की शिक्षा देने का अधिकार ले लिया है। वे बातें बनाते हैं, लेकिन जो शिक्षा वे देते हैं उस-पर अमल नहीं करते। वे शिक्षक बनना चाहते हैं और इसलिए दिखावा करने की कोशिश करते हैं। वे पहरावा बदल लेते हैं, अपने-आपको उपाधियाँ दे लेते हैं; लेकिन लाभ-कारी काम कोई नहीं करते। उनपर विश्वास मत करो। याद रखो कि किसी को भी खुद को 'शिक्षक' नहीं कहना चाहिए। ये बने हुए, सचाई के ठेकेदार शिक्षक समझते हैं कि मनुष्यों को रीति-रिवाजों और प्रतिज्ञाओं के सहारे परमात्मा तक पहुँचाया जा सकता है। वे यह नहीं देखते कि बाहरी बातों के तो कोई मानी ही नहीं, लेकिन जो सबसे ज्यादा महत्त्व-पूर्ण है, वह मनुष्य की आत्मा है। जो बाहरी और सहज है उसे वे पूरा करते हैं; लेकिन जो दर-असल आवश्यक और कठिन है, (प्रेम, दया, और सच) उसे वे बिलकुल छोड़ देते हैं। वे बाहरी नियमों को स्थिर रखने की ही चिन्ता करते हैं और बाहरी साधनों द्वारा उसे दूसरों से स्वीकार कराते हैं। फलतः वे मुर्दों के उस पुते हुए बक्से के समान हैं, जो बाहर से तो साफ है, लेकिन भीतर से घिनौना।

"बाहर से वे संतों और शहीदों का मान करते हैं; लेकिन दर-असल ये ही वे लोग हैं, जिन्होंने संतों को दुखी किया और मारा। जो भी अच्छाई है, उसके वे दुश्मन थे और हैं। संसार में सारी बुराई उन्हीं से आती है, क्योंकि जो अच्छाई है उसे

वे छिपाते हैं और बुराई को अच्छाई बताते हैं। यही बात है, जिससे हमें सबसे ज्यादा डरना चाहिए, क्योंकि, तुम स्वयं जानते हो कि कोई भी गलती ठीक की जा सकती है; लेकिन जबतक मनुष्य अच्छाई क्या है, इस विषय में भूल करते रहते हैं, वे अपनी भूलों को ठीक नहीं कर सकते। बिल्कुल यही हालत है इन बने-हुए पादरियों की।"

इसके बाद ईसा ने कहा, "मैं यहाँ यरुसलम में सब मनुष्यों का एका करना चाहता था, जिससे वे एक-दूसरे के साथ प्रेम करते हुए और एक-दूसरे की सेवा करते हुए जीवन बिताएँ, लेकिन ये लोग तो उन लोगों को मार डालना चाहते हैं, जो इस बात की शिक्षा देते हैं कि अच्छाई क्या है।"

इतना कहकर वह गिर्जाघर से चले गये।

ईसा ने कहा, "मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि यह गिर्जा अपनी सारी सजावट के साथ गिरकर नष्ट हो जायगा और इसका नामोनिशां भी नहीं रहेगा। लेकिन प्रभु का एक मन्दिर (गिर्जा) है---और वह उन लोगों के दिल में है, जो एक-दूसरे से प्रेम करते हैं।"

तब लोगों ने उनसे पूछा, "वह मन्दिर बनेगा कब ?" ईसा ने जवाब दिया, "अभी तो नहीं। चिरकाल तक लोग दूसरों को धोखा देने के लिए मेरे उपदेशों का उपयोग करेंगे और इससे युद्ध और अशांति होगी। सभी जगह बहुत ज्यादा अशांति होगी और प्रेम कम।

"लेकिन जब हर कोई सत्य-उपदेशों को समझ लेगा तो बुराई और प्रलोभनों का अंत हो जायगा।"

: ४० :

सच्चा निर्भयी है

स्क्रीबियों और फरीसियों ने ईसा को नष्ट करने के लिए जितनी भी कोशिशें हो सकती थीं, कीं। वे एक सभा में जमा हुए और उनका अंत कैसे लाया जाय, इसपर विचार शुरू हुआ। उन्होंने कहा, "इस आदमी को रोकना ही होगा। वह अपने उपदेशों को इतने प्रेरणात्मक ढंग से कहता है कि अगर उसे बढ़ने दिया गया तो हर कोई उसीपर विश्वास करेगा और हमारे धर्म को त्याग देगा। आधे लोग उसपर विश्वास भी करने लगे हैं और अगर हर कोई उसके इस उपदेश पर विश्वास कर लेगा कि सब मनुष्य भाई-भाई हैं और एक परमात्मा के पुत्र हैं और हमारे यहूदी लोग अन्य जातियों से अलग नहीं हैं, तो सभी चढ़ आयँगे और हमें जीत लेंगे और फिर यहूदी राज्य का अस्तित्व नहीं रहेगा।"

स्क्रीबियों और फरीसियों ने बहुत देर तक इस प्रश्न पर विचार किया। वे ईसा से पिंड छुड़ाने के लिए उन्हें मार डालना चाहते थे; लेकिन लोगों से उन्हें डर लगता था और वैसा करने की हिम्मत नहीं करते थे।

इसपर उनके लाट पादरी ने, जिसका नाम काइयाफस था, कहा, "आपको इतना डरने की आवश्यकता नहीं। समूचे समुदाय की रक्षा के लिए कभी-कभी एक मनुष्य को मार भी डालना पड़ता है। अगर हम इस आदमी का अंत नहीं करते तो सारी जाति नष्ट हो जायगी, अथवा अगर वह नष्ट नहीं होती तो वह बिखर जायगी और हमारे एकमात्र सच्चे धर्म को त्याग देगी। इसलिए हमें ईसा को मार डालने में संकोच

नहीं करना चाहिए ।"

जब काइयाफस ने यह कहा, सब उसके साथ सहमत हो गए और उन्होंने ईसा को मार डालने का फैसला किया । अगर ईसा यरुसलम में होते तो वे उन्हें तत्काल पकड़ लेते और मार डालते, लेकिन उन दिनों वे कहाँ हैं, इसका उन्हें पता न था।

लेकिन जब पासओवर[1] के भोज का दिन नजदीक था तो लाट पादरी ने सोचा कि ईसा निश्चय ही दूसरे लोगों के साथ भोज में आयँगे । उन्होंने अपने नौकरों से कह दिया कि यदि कोई ईसा को देखे तो वह उन्हें उसके पास ले आवे ।

और सचमुच ही, पासओवर से छः दिन पहले ईसा ने अपने शिष्यों से कहा, "चलो, अब हम यरुसलम चलें।" लेकिन शिष्यों को मालूम था कि लाट पादरी ईसा को मार डालना चाहते हैं, तो उन्होंने ईसा से यरुसलम न जाने की प्रार्थना की । उन्होंने कहा, "लाट पादरियों ने आपको पत्थरों से मार डालने का फैसला किया है । अगर आप वहाँ जायँगे तो निश्चय ही वे आपको मार डालेंगे ।"

ईसा ने जवाब दिया, "केवल वही, जो अंधेरे में चलता है, लड़खड़ाता और गिरता है, लेकिन जो सूर्य के प्रकाश में चलता है, वह लड़खड़ाता नहीं । वह मनुष्य गलती नहीं कर सकता जो परमात्मा की इच्छा के प्रकाश में वास करता है और जो प्रभु की इच्छानुसार आचरण करता है । ऐसा आदमी डर नहीं सकता । आओ, यरुसलम चलें ।"

वे तैयार हो गए और वहाँ गये ।

---

१. यहूदियों का एक त्यौहार ।

: ४१ :

षडयंत्र

जब लोगों ने यरुसलम में सुना कि ईसा आ रहे हैं तो वे उनसे आगे बढ़कर मिलने गये, उन्हें घेर लिया, उन्हें गधे पर बैठाया, उनके आगे-आगे दौड़ने लगे और पेड़ों से टहनियाँ तोड़ कर सड़क पर बिछा दीं। उन्होंने नारे लगाये, "यह है हमारा सच्चा बादशाह ! इन्होंने हमें सच्चे प्रभु के विषय में बताया है।" इस तरह ईसा गधे पर सवार होकर यरुसलम में गये। लोगों ने पूछा कि वह कौन है ? तो जो उन्हें जानते थे उन्होंने कहा, "यह ईसा हैं, यह नबी हैं, जो गैलिली में नाजरथ से प्रकट हुए हैं।"

जब वह गिर्जाघर के पास पहुँचे तो गधे से उतरे। वह गिर्जे में दाखिल हुए और लोगों को उपदेश देने लगे। फरीसियों और पादरियों ने उन्हें देखा, एक-दूसरे से बोले, "देखो, यह आदमी कर क्या रहा है। सब लोग उसीके पीछे चले जा रहे हैं।"

वे उसे फौरन पकड़ लेना चाहते थे, लेकिन हिम्मत नहीं थी, क्योंकि वे लोगों से डरते थे। तब उन्होंने योजना बनाई कि लोगों को उत्तेजित किये बिना यह कैसे किया जाय।

इधर ईसा लोगों को बिल्कुल स्थिर-भाव से शिक्षा देते रहे। यहूदियों के अलावा गिर्जे में प्राचीन यूनानी भी थे। यूनानियों ने सुना था कि ईसा के उपदेश केवल यहूदियों के लिए ही नहीं, बल्कि सब मनुष्यों के लिए हैं। वे उनके उपदेश सुनना चाहते थे। उन्होंने यह बात फिलिप को बताई और फिलिप ने एंड्रयू को।

ईसा और यूनानियों का मेल कराने से ईसा के शिष्य डरते थे। उन्हें डर था कि यहूदियों और दूसरी जातियों में भेद न करने से लोग ईसा के साथ नाराज होंगें। पहले तो वे उन्हें यह बताने का इरादा न कर सके कि यूनानी क्या चाहते हैं; लेकिन आखिर उन्होंने ईसा को यह बता दिया।

यह सुनकर कि यूनानी उनके शिष्य बनना चाहते हैं, ईसा पहले तो भौंचक्के रह गए। वह जानते थे कि उन्होंने यहूदियों और प्राचीन यूनानियों के बीच भेद नहीं रखा, इससे यहूदी उनसे नाराज़ होंगे। लेकिन जल्दी ही वह संभले और बोले, "यहूदियों और यूनानियों में कोई अन्तर नहीं, सब मनुष्यों में वही 'परम-पुरुष' है। यद्यपि मैं उसके लिए मरना चाहता हूँ, फिर भी उस 'परम-पुरुष' यानी सब मनुष्यों में एक प्रभु-शक्ति को स्वीकार करने का समय आ गया है। गेहूँ का एक दाना केवल तभी फलता है जब उसका निजी अस्तित्व नहीं रहता। मनुष्य केवल तभी पूर्ण होता है जब वह प्रभु-इच्छा की पूर्ति के लिए अपना जीवन दे देता है। जो अपने शारीरिक जीवन से प्यार करता है वह अपने आध्यात्मिक जीवन को नष्ट कर लेता है; लेकिन जो अपने शारीरिक जीवन का परित्याग करने को तैयार है वह आध्यात्मिक जीवन प्राप्त करता है।

"मेरी आत्मा में इस समय यह संघर्ष है : क्या मुझे अपने अस्थायी जीवन के प्रलोभन में फँसना है, या परम-पिता की इच्छा को पूरा करना है? अब वह समय आ गया है जबकि मुझे वही करना चाहिए, जिसके लिए मुझे संसार में भेजा गया था। क्या मैं यह कह सकता हूँ, "हे परम-पिता, मुझे जो करना चाहिए, उससे मुझे मुक्त कर दे?" मैं ऐसा कदापि नहीं

कह सकता। मुझे केवल यही याचना करनी है, "हे परम-पिता! अपने अंतस् में मैं आपका अनुभव करूँ, मैं 'परम-पुरुष' को प्रकाशित करूँ और सब मनुष्यों को परस्पर मिला दूँ।"

यहूदियों ने इसका उत्तर दिया, "हमें मालूम है कि ईसा अवश्य आयगा, लेकिन 'परम-पुरुष' को प्रकाशित करने के तुम्हारे आशय को हम नहीं समझ सके।"

ईसा ने इसका उत्तर दिया : "परम-पुरुष को प्रकाशित करने का अर्थ है आध्यात्मिक प्रकाश में रहना। हम सबके अन्दर आध्यात्मिक प्रकाश मौजूद है। संपूर्ण अंतरिक्ष में व्याप्त 'परम-पुरुष' को प्रकाशित करने का मतलब इस बात में विश्वास करना है कि हर मनुष्य में प्रभु-शक्ति विद्यमान है। जो मेरे उपदेशों में विश्वास करता है, वह मुझमें नहीं, बल्कि प्रभु-शक्ति में विश्वास करता है, और प्रभु-शक्ति संसार को जीवन प्रदान करती है। आपमें से हरेक में वह मौजूद है। जो मेरे उपदेशों को समझता है वह उस शक्ति को जानता है, क्योंकि वह शक्ति उसमें वास करती है और संसार को जीवन प्रदान करती है। अगर कोई मेरी बातों को सुनता है और उन्हें समझता नहीं है तो मैं उसे दोष नहीं देता, क्योंकि मैं दोष देने नहीं, बल्कि रक्षा करने आया हूँ। जो मेरे शब्दों को समझता नहीं, वह प्रभु-शक्ति में विश्वास नहीं करता, क्योंकि मैं जो कहता हूँ वह अपनी ओर से नहीं, बल्कि परम-पिता की शक्ति से कहता हूँ। परमात्मा की वही शक्ति मेरे अन्दर है। जो मैं कहता हूँ, वह उस शक्ति ने ही मुझे बताया है।"

इतना कहकर, ईसा चले गये और लाट पादरी की आँखों से ओझल हो गये।

: ४२ :

विश्वासघात

जिन्होंने इन प्रवचनों को सुना उनमें से अनेक अमीर और शक्तिशाली व्यक्ति ईसा के उपदेशों पर विश्वास करते थे; लेकिन वे फ़रीसियों के सामने इसे स्वीकार करने से डरते थे, क्योंकि एक भी फरीसी उन उपदेशों को नहीं मानता था। वे इन उपदेशों की सचाई को स्वीकार नहीं करते थे, क्योंकि वे मानवी उपदेशों में विश्वास करने के आदी हो गए थे और परमात्मा के आदेशों को नहीं मानते थे।

उसके बाद लाट पादरियों और स्क्रीबियों ने काइयाफस के दरबार में सभा की और इस बात पर विचार किया कि ईसा को मार डालने के लिए उसे चोरी से कैसे पकड़ा जा सकता है ? वे उसे खुले आम पकड़ने से डरते थे। ईसा के सबसे पहले शिष्यों में से एक, यहूदा इस्कूती, उनकी सभा में आया और बोला, "अगर लोगों के सामने आप ईसा को पकड़ने से डरते हैं तो मैं ऐसा मौका देखूँगा जब बहुत थोड़े लोग उनके साथ हों। मैं आपको बतला दूंगा कि वह कहाँ हैं और तब आप उन्हें पकड़ सकते हैं। आप लोग इसके बदले में मुझे क्या देंगे ?" इसपर उन्होंने उसे चांदी के तीस टुकड़े देने का वचन दिया। यहूदा सहमत हो गया और तब से लेकर वह ईसा को लाट पादरियों के हवाले करने के मौके की तलाश में रहने लगा।

इसी बीच ईसा फिर यरुसलम से चले गये और अपने शिष्यों के साथ एकांत में रहने लगे। जब बिना खमीर की रोटी के भोज का पहला दिन आया तो शिष्यों ने उनसे पूछा,

"हम पासओवर का भोज कहाँ करेंगे ?" ईसा ने कहा, "किसी एक गाँव में जाओ और जो पहला मकान पड़े उसीमें प्रवेश करो और कहो कि पासओवर के भोज की तैयारी के लिए हमारे पास समय नहीं है; लेकिन हमें यहाँ भोज कर लेने की स्वीकृति चाहिए ।"

शिष्यों ने उनके कहे अनुसार किया और वे एक गाँव में गये । वहाँ सबसे पहले पड़नेवाले मकान में वे गये और मकान के मालिक ने उन्हें भीतर आने की स्वीकृति दे दी ।

जब वे सब आ गये—ईसा और उनके बारह शिष्य, जिनमें यहूदा इस्क्रूती भी था—तो वे पासओवर के भोज के लिए एक मेज पर बैठ गए । ईसा ने भांप लिया कि यहूदा ने मार डालने के लिए उन्हें फरीसियों के हवाले करने का वचन दिया है; लेकिन वह यहूदा के साथ बुराई के एवज में बुराई नहीं करना चाहते थे और सब शिष्यों के सामने उसपर दोष भी नहीं लगाना चाहते थे। जिस प्रकार वह हमेशा अपने शिष्यों को प्रेम करने की शिक्षा देते थे, उसी तरह अब भी वह प्रेम से यहूदा के दिल को कोमल बनाना चाहते थे ।

जब वह और उनके बारहों शिष्य मेज पर बैठे थे, ईसा ने थोड़ी-सी रोटी ली । उसके बारह टुकड़े किये और उनमें से हरेक को यह कहते हुए एक-एक टुकड़ा दिया, "यह मेरा जिस्म है, इसे लो, और खाओ ।" इसके बाद उन्होंने एक प्याले में शराब उंडेली और उसे शिष्यों के हवाले किया, और कहा, "इस प्याले में से तुम सब पियो । यह मेरा खून है ।"

इस तरह जब एक-एक करके उन्होंने प्याले में से शराब पी

ली तो उसके बाद ईसा ने कहा, "हाँ, यह मेरा खून है, जिसे मैं दुनिया के गुनाहों के लिए वहा रहा हूँ।" इतना कह चुकने के बाद ईसा मेज पर से उठे, उन्होंने अपना चोगा उतार दिया, उन्होंने कमर में अंगोछा बांधा, पानी का एक लोटा लिया, और बोले, "अब मैं सब शिष्यों के पाँव धोऊँगा।" पहले वह पतरस के पास आये; लेकिन पतरस वहाँ से यह कहता हुआ हट गया कि क्या एक गुरु शिष्यों के पाँव धो सकता है? ईसा ने कहा, "आप लोगों को यह विचित्र लगता है कि मैं आपके पाँव धोना चाहता हूँ, लेकिन जल्दी ही आप जान लेंगे कि मैं यह क्यों करता हूँ। मैं यह इसलिए करता हूँ कि यद्यपि आप लोग पवित्र हैं, तथापि आपमें हर कोई पवित्र नहीं है।"

ईसा ने जब यह कहा तो वह यहूदा के बारे में सोच रहे थे।

तब ईसा ने यहूदा सहित सब शिष्यों के पाँव धोये। इसके बाद अपना चोगा पहनकर वह अपने सब शिष्यों को उपदेश देते हुए बोले :

"क्या आपको मालूम हुआ कि मैंने यह क्यों किया? मैंने यह इसलिए किया है कि आपको भी हमेशा एक-दूसरे के साथ यही करना होगा। मैं, जो आप सबका गुरु हूँ, आप लोगों को यह सिखाने के लिए करता हूँ कि जो आपको तकलीफ दे उसके साथ आप कैसा बर्ताव करें। अगर आप यह जान लेंगे और इसीके अनुसार अमल करेंगे तो इससे हमेशा आपका कल्याण ही होगा।"

इतना कहकर, ईसा उदास हो गए और आगे बोले, "हाँ–हाँ, जिन सबके मैंने पाँव धोये हैं, उनमें से एक मुझे धोखा देगा।"

शिष्यों ने एक-दूसरे की ओर देखा। उन्हें पता नहीं था कि वह किसके बारे में कह रहे हैं। एक शिष्य ईसा के करीब ही बैठा था। साइमन पतरस ने उसे इशारा किया कि वह ईसा से पूछे कि वह किसके बारे में ऐसा कह रहे हैं। उसने पूछा। ईसा ने कहा, "जिसे मैं रोटी का टुकड़ा दूंगा, वही वह शिष्य है।" उन्होंने यहूदा इस्कृती को रोटी का एक टुकड़ा दिया, और कहा, "जो कुछ तुम करना चाहते हो, उसे जल्दी से करलो !" पहले तो कोई भी न समझा कि ईसा के कहने का मतलब क्या है; लेकिन यहूदा समझ गया। जैसे ही उसने रोटी का टुकड़ा लिया वह उठा और बाहर निकल गया। जबतक और शिष्य समझें कि यह क्या हो रहा है तबतक उसे पकड़ने की कोशिश करने में काफी देर हो चुकी थी, क्योंकि रात अंधेरी थी।

जब यहूदा चला गया, ईसा ने कहा, "बच्चो, मैं बहुत दिन तक तुम लोगों के साथ नहीं रहूँगा। मेरे उपदेशों के बारे में तर्क न करना, लेकिन, जैसाकि मैंने फरीसियों से कहा था, 'जो मैं कहता हूँ वही करो। मैं तुम्हें एक नया आदेश देता हूँ: जैसे मैंने तुम सबसे अखीर तक प्यार किया है, इसी तरह तुम भी, अखीर तक एक-दूसरे के साथ, और सब मनुष्यों से प्रेम करो। इस एक आदेश में मेरे सारे उपदेश समा जाते हैं। केवल इसी एक आदेश का पालन करने से तुम मेरे सच्चे शिष्य बन सकते हो। एक-दूसरे से प्रेम करो और सब मनुष्यों से प्रेम करो।"

: ४३ :

परमात्मा के साथ एकाकार

उन्होंने अपने शिष्यों से आगे कहा, "प्रभु की पूर्णता के अधिकाधिक निकट आना ही जीवन है। वही एक मार्ग है। मैं इसका अनुसरण करता हूँ और आप इस मार्ग को जानते हैं।"

इसपर टॉमस ने उनसे कहा, "नहीं, हम नहीं जानते कि आप कहाँ जा रहे हैं और इसलिए हम उस मार्ग को नहीं जान सकते।"

ईसा ने जवाब दिया, "मैं परम-पिता के पास जा रहा हूँ, और मेरे उपदेश उस तक पहुँचने का मार्ग है। मेरे उपदेशों की राह के सिवा कोई भी अपने जीवन को परम-पिता के साथ एकाकार नहीं कर सकता। प्रेम के बारे में मेरे उपदेशों को पूर्ण करो और आपको परम-पिता का ज्ञान हो जायगा।"

फिलिप ने कहा, "हमें परम-पिता के दर्शन कराइए।"

ईसा ने जवाब दिया, "यह कैसी बात है कि आप परम-पिता को नहीं जानते! मेरा उपदेश है कि मैं परम-पिता में हूँ और परम-पिता मुझमें हैं। जो मेरे उपदेशों के अनुसार आचरण करता है और मेरे आदेशों को पूर्ण करता है वह परम-पिता को जान लेगा। मैं मर जाऊँगा और सांसारिक मनुष्य मुझे नहीं देखेंगे, लेकिन मेरी आत्म-शक्ति नहीं मरेगी और आप उससे जीवन प्राप्त करेंगे। तभी समझ सकेंगे कि मैं परम-पिता में हूँ और परम-पिता मुझमें हैं।"

इसपर यहूदा (इस्करियोती नहीं बल्कि अन्य) ने पूछा, "क्या आपकी आत्म-शक्ति सब मनुष्यों में नहीं और केवल हममें ही प्रवेश करेगी?"

ईसा ने जवाब में कहा, "जो मेरे उपदेशों को पूरा करता है, उसे परम-पिता प्रेम करते हैं और मेरी आत्म-शक्ति उसमें वास करती है। लेकिन परम-पिता उसे प्रेम नहीं करते, जो मेरे उपदेशों को पूरा नहीं करता और मेरी आत्म-शक्ति भी उस मनुष्य में वास नहीं करती। मेरे उपदेश मेरे निजी नहीं हैं, बल्कि परम-पिता के हैं।

"बस इतना ही इस समय मैं आपको बता सकता हूँ। लेकिन मेरी आत्म-शक्ति यानी सत्य की शक्ति बाद में आप लोगों में जगेगी और तब मैंने जो आपको बताया है उसकी याद आयगी और वह अधिकाँश समझ में आ जायगा। जब आप इसे समझ लेंगे तो आप शान्ति अनुभव करेंगे—ऐसी शांति नहीं, जैसी सांसारिक लोगों को प्राप्त होती है; बल्कि ऐसी शांति कि आप किसी से भी नहीं डरेंगे।

"आप इस बात से दुखी क्यों हैं कि मैं आप सबको छोड़ रहा हूँ ? मैं परम-पिता के पास जा रहा हूँ और उससे आप लोगों के पास सत्य की शक्ति के रूप में लौटकर आऊँगा, आप लोगों के दिलों में प्रवेश करूँगा। आपको मेरी मृत्यु पर दुखी नहीं, बल्कि खुश होना चाहिए; क्योंकि मेरी जगह—मेरे शरीर की जगह—आप लोग अपने दिलों में मेरी आत्म-शक्ति को पा जायँगे और वह आप लोगों के लिए सुखकर है।"

: ४४ :

प्रेम ही परमात्मा है

"अगर मेरे प्रेम के नियम से आप लोगों का पथ-निर्देश होगा और आप उस कानून का पालन करेंगे तो आपको आपकी

इच्छानुसार सब-कुछ प्राप्त होगा; क्योंकि यह परम-पिता की इच्छा है कि जिसकी तुम चाह करो, तुम्हें प्राप्त हो। चूंकि परम-पिता परमात्मा ने, जो अच्छा है, वही मुझे दिया है, इसलिए जो अच्छा है वह मैं आपको देता हूँ। जैसे मैं परम-पिता का आदेश पूरा करता हूँ, उसी तरह अगर आप मेरा आदेश पूरा करेंगे तो आप धन्य हो जायँगे। मेरा आदेश है कि जैसे मैं आपसे प्रेम करता हूँ आप भी एक-दूसरे से प्रेम करें, अर्थात् आप प्रेम के लिए अपना शारीरिक जीवन उत्सर्ग कर देने को तैयार रहें। मैंने जो आपको सिखाया है अगर आप उसके अनुसार आचरण करते हैं तो आप भी मेरे ही समान हैं। मैं आपको दास नहीं समझता, बल्कि अपने समान ही समझता हूँ, क्योंकि जो मैंने परमात्मा से समझा था वह सब आपको बता दिया है, और जो मैं करता हूँ उसे आप भी कर सकते हैं। मैंने आपको केवल सच्चा उपदेश दिया है और केवल वही उपदेश सच्चा कल्याण प्रदान करता है।

"एक-दूसरे से प्रेम करना ही संपूर्ण उपदेश है। अगर दुनिया आपसे नफरत करती है और आपको दंड देती है तो आश्चर्य न करो, क्योंकि मेरे उपदेश संसार के लिए घृणा-पूर्ण हैं। अगर आप दुनिया का साथ देते हैं तो वह आपसे प्रेम करेगी। लेकिन मैंने आपको दुनिया से अलग कर दिया है और इसलिए वह आपसे घृणा करेगी और आपको सज़ा देगी। अगर वे मुझे दंड देते हैं तो वे आपको भी दंड देंगे। वे ऐसा करने के लिए लाचार हैं, क्योंकि वे परमात्मा को नहीं जानते। मैंने उन्हें बताया है कि उनका परमात्मा कौन है, लेकिन वे मेरी बात नहीं सुनते। उन्होंने मेरे उपदेश को समझा नहीं।

मैंने परमात्मा के बारे में उन्हें जो बताया था, वे उसे समझे नहीं। इस कारण उन्होंने मुझसे और भी ज्यादा नफरत की।

"मैं आपको इससे कहीं अधिक कहूँगा, लेकिन इस समय आपके लिए उसे समझना कठिन होगा। जब सत्य की शक्ति प्रवेश पा जायगी तो वह आपको संपूर्ण सत्य प्रकट कर देगी, क्योंकि वह आपको कोई नई या अपना निजी कुछ नहीं बतायगी, बल्कि वह तोआपको प्रभु का आदेश ही बतायगी और आपके जीवन की सभी घटनाओं में आपको मार्ग दिखायगी। आपके अन्दर की यह शक्ति आपको वही बतायगी, जो मैं आपको बताता हूँ।"

: ४५ :

सत्य-जीवन

इसके बाद ईसा ने अपनी दृष्टि जन्नत की ओर उठाई, और बोले, "मेरे परम-पिता, आपने अपने पुत्र को जीवन की स्वतन्त्रता प्रदान की है, जिससे वह सत्य-जीवन को प्राप्त कर सके। सत्य-प्रभु को जान लेना ही सत्य-जीवन है और मैंने मनुष्यों को आपका दर्शन कराया है। आपने मुझे जो करने की आज्ञा दी थी मैंने वह किया है। वे पहले भी आपके थे, लेकिन आपके आदेशानुसार मैंने उन्हें सत्य प्रकट किया है कि आप उनके अन्दर हैं और उन्होंने आपको पहचान लिया है। वे समझ गए हैं कि जो कुछ मुझमें है वह उनके भी अन्दर है, और वह सब आप ही से आता है। वे समझ गए हैं कि यह सब जो मेरा है वह आपका है, और यह सब जो आपका है वह मेरा है। अब मैं संसार का नहीं रहा, बल्कि

मैं आपके पास आ रहा हूँ; लेकिन वे तो संसार में रहेंगे और इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, हे पिता, उन्हें सत्य-पथ में बनाए रहना। मैं यह प्रार्थना नहीं करता कि आप उन्हें संसार से उठा लें, लेकिन यह प्रार्थना करता हूँ कि आप उन्हें उनके असत्य के लिए क्षमा करें, वे सब एक होकर रहें—जैसे आप मुझमें हैं और मैं आपमें हूँ, और साथ ही यह भी कि वे हममें भी रहें। सब-के-सब मिलकर एक हों और सब यह समझें कि वे अपनी निजी इच्छा से नहीं जन्मे, बल्कि आपने, उन्हें प्रेम करते हुए, इस संसार में भेजा है, जैसेकि आपने मुझे भेजा था।

"हे सत्य-पिता, यह संसार अभी आपको नहीं जानता, लेकिन मैं आपको जानता हूँ। वे मेरे द्वारा आपको जानना सीख गए हैं। मैंने उन्हें समझा दिया है कि आपने उन्हें प्रेम करते हुए जीवन प्रदान किया है और आपका यह प्रेम उनसे आपको ही लौटना चाहिए।"

: ४६ :

अहंकार मत करो

इसके बाद ईसा उठे और अपने शिष्यों के साथ जैतून के पहाड़ पर गये। रास्ते में वह उनसे बोले, "हाँ, जैसा कि धर्म-ग्रंथ में कहा है; वह समय आ गया है जब चरवाहा मार डाला जायगा और भेड़ें बिखर जायंगी। यही दशा आपकी होगी। मैं पकड़ लिया जाऊँगा और आप लोग भाग जाओगे।"

पतरस ने कहा, "नहीं, मैं नहीं भागूँगा, हालांकि और सब

भाग जायँगे, लेकिन मैं आपको कदापि नहीं छोड़ूँगा । आपके साथ तो मैं कहीं भी जाने को तैयार हूँ : जेल या मृत्यु तक के लिए भी !"

लेकिन ईसा ने कहा, "जो आपको करना हो, करोगे । उसके बारे में पहले से शेखी न बघारो । संभव है, आज रात को, मुर्गे के बांग देने से पहले हो, आप एक बार नहीं, बल्कि तीन बार मेरा साथ छोड़ दें ।"

"मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा," पतरस ने कहा और दूसरे शिष्यों ने भी यही कहा ।

जब वे गेट्समेन के बाग में पहुँचे तो ईसा ने उनसे कहा, "थोड़ी देर यहाँ विश्राम कर लो । मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ ।" वह पतरस और ज़बेदी के दो बेटों को साथ ले गये, और उनसें बोले, "मैं दुखी हूँ । मेरे साथ रहो ।"

फिर वह उनसे कुछ परे चले गये और भूमि पर लेट गये और प्रार्थना करने लगे, यह कहते हुए, "मेरे परम-पिता, जो मेरे साथ होनेवाला है उससे मुझे मुक्त कर !" इसके बाद वह थोड़ी देर तक चुप रहे फिर आगे बोले, "लेकिन इसके साथ ही मेरी नहीं बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो, और वह मेरी नहीं, बल्कि आपकी इच्छा के अनुसार ही ।"

इसके बाद वह उठे और अपने शिष्यों के पास गये, लेकिन वे सब गहरी नींद में सोये पड़े थे । ईसा ने उन्हें जगाया और कहा, "अपनी आत्मा में साहस उत्पन्न करो । केवल आत्म-शक्ति ही बलवान है, यह माँस का पुतला तो दुर्बल है ।"

ईसा फिर वहाँ से चले गये और उन्होंने पुनः प्रार्थना शुरू की. कहा, "हे मेरे परम-पिता ! आपकी इच्छा पूर्ण हो,

मेरे अनुसार नहीं बल्कि आपकी इच्छानुसार।"

यह कहकर वह अपने शिष्यों के पास लौट आये और देखा कि वे फिर से सो गए हैं। वह तीसरी बार उनके पास से चले गये और फिर बोले, "हे मेरे परम-पिता, मेरी नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूर्ण हो!"

इसके बाद वह शिष्यों के पास लौट आये और उनसे बोले, "अब आओ चलें, मैं अपनेको सांसारिकता के हाथों में उत्सर्ग करने जा रहा हूँ।"

: ४७ :

गिरफ्तारी

जैसे ही उन्होंने यह कहा यहूदा इस्कूती वहां आ पहुंचा। उसके साथ लाट पादरियों के हथियार-बंद फौजी तथा रोशनी लिये नौकर थे। यहूदा एकाएक ईसा के पास गया और उसने उन्हें नमस्कार किया और उन्हें चूमा।

ईसा ने उससे पूछा, "मित्र, तुम क्यों आये हो?"

तुरंत ही सिपाहियों ने ईसा को घेर लिया और उन्हें पकड़ लेना चाहा। लेकिन पतरस ने लाट पादरी के एक नौकर से तलवार छीन ली और उसका दाहिना कान काट दिया। यह देखकर ईसा ने पतरस से कहा, "तलवार को पुनः उसकी म्यान में रख दो। जो लोग तलवार उठाते हैं, वे तलवार से मारे जायंगे।"

उसके बाद ईसा उन लोगों की ओर मुखातिब हुए जो उन्हें पकड़ने आये थे, और बोले, "तुम लोग एक डाकू को पकड़ने की तरह मुझे हथियारों के साथ क्यों पकड़ने आये हो?

क्या मैं हर रोज आप लोगों को उपदेश देता हुआ गिर्जा में आपके बीच नहीं होता---तब आपने मुझे क्यों नहीं पकड़ा ?"

इसपर अफसर ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि ईसा को बाँध लो और सिपाहियों ने उन्हें बाँध लिया। पहले वे उन्हें काइयाफस के पास ले गये। यह काइयाफस वही था, जिसने ईसा को मार डालने के लिए यह कहकर फरीसियों को प्रेरित किया था कि सारी जाति के मर जाने से तो एक आदमी का मरना कहीं बेहतर है। इस तरह ईसा को एक मकान के सहन में लाया गया।

ईसा के सारे शिष्य भाग गये। उनमें से केवल एक---पतरस---दूर-दूर रहता हुआ ईसा के पीछे चला और देखता रहा कि वे उन्हें कहाँ ले जाते हैं।

जब ईसा को लाट पादरी के सहन में लाया गया, तो पतरस भी यह देखने के लिए दाखिल हुआ कि क्या होता है। एक औरत ने उसे सहन में देखा और पूछा, "क्या तुम भी गैलिली के ईसा के साथ थे ?" तब पतरस डरा कि कहीं वह भी ईसा के साथ गुनहगार न हो जाय और उत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि तुम किस बारे में बात कर रही हो।"

इसके बाद ईसा को मकान के अन्दर ले जाया गया तो पतरस भी बाकी लोगों के साथ ड्योढ़ी में दाखिल हुआ। वहाँ आग जल रही थी और एक दूसरी औरत आग ताप रही थी। जब पतरस उस आग के पास आया तो इस औरत ने उसकी ओर देखा और कहा, "मैं समझती हूँ कि यह आदमी नाजरथ में ईसा के साथ था।" पतरस इससे बहुत डर गया और कसमें खाने लगा कि वह ईसा के साथ कभी नहीं रहा और उसके

बारे में कुछ नहीं जानता।

थोड़ी देर बाद कुछ दूसरे और लोग पतरस के पास गये और बोले, "तुम सब एक ही हो, तुम भी तो दंगाइयों में से एक हो। तुम्हारी बोली से लगता है कि तुम गैलिली के रहने वाले हो।" इसपर पतरस ने फिर कसम खाई कि उसने तो ईसा को कभी देखा तक नहीं। बड़ी मुश्किल से अभी वह यह कह ही पाया था कि मुर्ग़े ने बाँग दी और पतरस को ईसा के ये शब्द याद हो आए, 'आज रात ही मुर्गे के बाँग देने से पहले तुम हो सकता है एक बार नहीं, तीन बार मुझे छोड़ दो।' वह सहन से बाहर चला गया और फूट-फूटकर रोने लगा।

: ४९ :

यातना

बड़े-बूढ़े और स्क्रीबी लाट पादरी के मकान पर जमा हुए और जब वे सब आ गये तो ईसा को भीतर लाया गया और लाट पादरी ने पूछा कि वह क्या शिक्षा देता था और उसके शिष्य कौन थे ?

ईसा ने जवाब दिया, "मैं हमेशा हर किसी के सामने खुले आम बोला हूँ और मैंने कभी किसी बात को नहीं छिपाया। आप मुझसे क्यों पूछते हैं ? उन लोगों से पूछिए जिन्होंने मेरे उपदेशों को सुना और समझा है। वे ही आपको बतायंगे।"

जब ईसा ने यह कहा तो लाट पादरी के नौकरों में से एक ने उनके मुँह पर चांटा मारा और कहा, "जानते हो तुम किससे बात कर रहे हो ? क्या कोई लाट पादरी को ऐसे

जवाब देता है ?"

ईसा ने कहा, "अगर मैंने बुरी तरह जवाब दिया है तो मुझे बताओ कि उसमें ग़लत क्या था ? लेकिन अगर मैंने बुरे तरीके से जवाब नहीं दिया तो तुम मुझे मारते क्यों हो ?"

लाट पादरी और बड़े-बूढ़ों ने ईसा को सज़ा देने की कोशिश की, लेकिन उन्हें कोई सबूत न मिला। आखिर उन्होंने दो झूठे गवाह तैयार किये और इन गवाहों ने कहा कि ईसा ने ऐलान किया था कि वह गिर्जाघर को नष्ट कर सकता है और उसे तीन दिन में बना भी सकता है। लाट पादरी ने ईसा से पूछा, "इसके बारे में तुम्हें क्या कहना है ?" लेकिन ईसा ने जवाब नहीं दिया। इसके बाद लाट पादरी ने उनसे कहा, "तो हमें बताओ, क्या तुम ईसा, प्रभु के पुत्र हो ?" ईसा ने जवाब दिया, "हाँ।"

इसपर लाट पादरी चिल्लाया, "तुम प्रभु के निंदक हो ! हमें और सबूत क्या चाहिए ? आप सबने सुना है कि यह किस प्रकार प्रभु को निंदा करता है ?" लाट पादरी ने सभा में उपस्थित लोगों से कहा : "अब तो आप लोगों ने खुद ही सुन लिया कि यह किस प्रकार प्रभु की निंदा करता है ! इसके लिए आप इसे क्या सज़ा देना चाहते हैं ?"

इस पर उन सबने जवाब दिया, "मौत !"

इसके बाद सब लोग और संतरी ईसा पर झपटे और सबने उनके मुंह पर थूकना शुरू कर दिया और उनके चांटे लगाने लगे। उन्होंने उनकी आँखों पर पट्टी बाँध दी, उन्हें पीटा और पूछा, "तुम तो प्रभु के पुत्र हो; अब तनिक अंदाज करो कि किसने तुम्हें पीटा है ?" लेकिन ईसा मौन रहे।

: ४९ :

निर्भयता

इसके बाद ईसा को बांधकर रोमन गवर्नर, पॉंटियस पाइलट के पास ले जाया गया। जब उन्हें पाइलट के सामने उन्होंने हाज़िर किया तो पाइलट बाहर निकल कर ड्योढ़ी में आया। जो लोग ईसा को लाये थे उनसे उसने पूछा, "तुम इस आदमी पर क्या दोष लगाते हो?" उन्होंने जवाब दिया, "यह पापी है। इसीलिए हमने इसे आपके सामने हाज़िर किया है।"

पाइलट ने जवाब दिया, "अगर तुम इसे पापी मानते हो तो तुम लोग खुद ही अपने नियमों द्वारा इसका न्याय करो।" लेकिन वे बोले, "हम इसे इसलिए लाये हैं कि आप इसे मृत्यु-दंड दें, क्योंकि हमें किसी को मार डालने की इजाज़त नहीं है।"

तब पाइलट ने उनसे फिर पूछा कि ईसा का अपराध क्या है? वे बोले, "वह लोगों को भड़काता है और उन्हें सीज़र को कर अदा करने के लिए मना करता है और अपने-आपको यहूदियों का बादशाह कहता है।"

पाइलट ने उनकी बात सुनी और ईसा को अदालत में पेश करने की आज्ञा दी।

जब ईसा उसके सामने आये, पाइलट ने पूछा :

"क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?" ईसा ने जवाब दिया, "क्या आप यह अपनी ओर से मुझसे पूछ रहे हैं, या आप उन्हीं के शब्दों को दोहरा रहे हैं?"

पाइलट ने जवाब दिया, "मैं यहूदी नहीं हूं। तुम्हारे ही लोग तुम्हें मेरे सामने लाये हैं, क्योंकि तुम अपने-आपको

बादशाह कहते हो।"

ईसा ने कहा, "हाँ, मैं बादशाह हूँ, पर मेरा पृथ्वी पर का साम्राज्य नहीं है। अगर मैं भौतिक वस्तुओं का बादशाह होता तो मेरी प्रजा मेरी ओर से लड़ती और मुझे वह यहूदियों के हाथों में न सौंपती। लेकिन आप देखते हैं, जो उन्होंने मेरे साथ किया है! मेरा पृथ्वी पर का राज नहीं है।"

तब पाइलट ने पूछा, "क्या तुम अब भी अपने को बादशाह मानते हो?"

ईसा ने कहा, "मैं लोगों को स्वर्ग के साम्राज्य के बारे में सचाई की शिक्षा देता हूँ और जो सचाई के साथ जीवन बिताता है वह बादशाह है।"

पाइलट ने कहा, "सचाई? सचाई क्या है?"

पाइलट ने ईसा की ओर पीठ की और वह बाहर यहूदियों के पास गया और उनसे बोला, "मैं नहीं समझता कि इस आदमी ने कोई बुराई की है, न ऐसी कोई बात है, जिसके लिए इसे मृत्यु-दंड दिया जाय।"

लेकिन लाट पादरियों ने यह कहते हुए अनुरोध किया कि इसने बहुत बुराई की है, लोगों को भड़काया है और सारे जूडिया को विद्रोही कर दिया है।

इसके बाद पाइलट ने लाट पादरियों की मौजूदगी में ईसा से फिर सवाल किया और उसने उनसे पूछा, "तुम देखते हो कि वे तुमको किस प्रकार अपराधी बतलाते हैं? तुम अपनी सफाई क्यों नहीं देते?" लेकिन ईसा मौन रहे और एक भी शब्द न बोले। इससे पाइलट को बहुत ही आश्चर्य हुआ।

तब पाइलट को याद आया कि गैलिली तो बादशाह हैरोद

के राज्य में है। उसने पूछा, "वह गैलिली का रहनेवाला तो नहीं ?" उन्होंने जवाब दिया कि वह वहीं का वासी है। इसपर पाइलट ने कहा, "अगर वह गैलिली का वासी है तो वह हैरोद के अधिकार में है।" और यहूदियों से पिंड छुड़ाने के लिए पाइलट ने यहूदियों को हैरोद के पास भेज दिया।

: ५० :

संकोच

तब ईसा को हैरोद के पास ले जाया गया। हैरोद ने ईसा के बारे में बहुत-कुछ सुन रखा था और उन्हें देखकर वह बहुत खुशहुआ। उसने ईसा को अपने सामने बुलाया और उनसे कई बातों के बारे में पूछना शुरू किया। लेकिन ईसा ने जवाब नहीं दिया। लाट पादरियों और स्क्रीवियों ने पाइलट के सामने पेश करने की तरह ही हैरोद के सामने भी ईसा पर अनेक दोष लगाये और कहा कि यह विद्रोही है। लेकिन हैरोद ने ईसा को महज एक बेवकूफ आदमी समझा और उसके सिर पर एक लाल फीता बांधने की आज्ञा दी ताकि वह बेहूदा-सा दिखाई देने लगे और उसने बेवकूफी की इस पोशाक में उसे पाइलट के पास लौटा दिया।

जब वह पाइलट के सामने दूसरी बार लाया गया तो पाइलट ने यहूदियों के शासकों को फिर बुलाया और उनसे कहा, "आप इस आदमी को मेरे सामने इसलिए लाये थे कि वह लोगों को विद्रोह के लिए उकसाता है। मैंने आपके सामने ही इसकी जांच की थी और जान नहीं सका कि वह विद्रोही है। मैंने उसे आपके साथ हैरोद के पास भेजा था,

और जैसाकि आप देखते हैं, वहाँ भी इसके खिलाफ कोई खतरनाक बात मालूम नहीं हो पाई। इसलिए मैं समझता हूँ कि इसे फांसी नहीं दी जायगी, लेकिन इसके कोड़े लगाये जायँगे और उसके बाद छोड़ दिया जायगा।

जब उन्होंने यह सुना तो वे सब चिल्ला उठे, "नहीं-नहीं, इसे रोमन तरीके से मौत की सजा दी जाय···इसे टिकटी पर कीलों से लटकाया जाय।"

पाइलट ने उनकी बात सुनी और बोला, "अच्छी बात है। लेकिन यह एक पुरानी रीति है कि पासओवर के अवसर पर एक अपराधी को क्षमा-दान किया जाय। एक डाकू, बाराबास है, जिसे मृत्यु-दंड दिया गया है और दूसरा यह आदमी है। दो में से एक को मुक्त किया जा सकता है। इनमें से कौन छोड़ा जाय—ईसा या बाराबास।"

पाइलट ईसा को बचाना चाहता था; लेकिन लाट पादरियों ने लोगों को प्रेरणा की और वे सब चिल्लाये, "बाराबास! बाराबास!"

लेकिन पाइलट अब भी ईसा को मृत्यु-दंड नहीं देना चाहता था और उसने लाट पादरियों को पुनः प्रेरणा की कि वह उसे मुक्त कर दें। वह बोला, "आप सब लोग उसके खिलाफ क्यों अड़ गए हैं? उसने कोई बुरा काम नहीं किया और उसे फांसी देने का कोई कारण भी नजर नहीं आता।"

लेकिन लाट पादरी और उनके नौकर फिर चिल्लाये, "उसे फांसी दो! उसे रोमन तरीके से फांसी दो! उसे फांसी दो! उसे फांसी दो!"

पाइलट ने कहा, "तब इसे ले जाओ और अपने-आप

उसे फांसी दो, क्योंकि मुझे तो उसमें कोई दोष दीखता नहीं।"

लाट पादरियों ने कहा, "कानून के अनुसार ही हम मांग करते हैं। अपने को 'प्रभु का पुत्र' कहने के लिए कानून के अनुसार उसे फांसी दी जानी चाहिए।"

इसपर पाइलट असमंजस में पड़ गया, क्योंकि वह नहीं जानता था कि 'प्रभु का पुत्र' का मतलब क्या है!

वह लौटकर अदालत में चला गया और उसने फिर ईसा को बुलाया और उनसे पूछा, "तुम कौन हो, और कहाँ से आये हो?" लेकिन ईसा ने जवाब नहीं दिया। पाइलट ने कहा, "तुम मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देते? क्या तुम जानते हो कि तुम मेरे अधिकार में हो और मैं तुम्हें फांसी भी दे सकता हूँ और मुक्त भी कर सकता हूँ?"

इसके बाद ईसा ने जवाब दिया, "नहीं, आपका मुझपर कोई अधिकार नहीं। अधिकार तो केवल परमात्मा का है।"

: ५१ :

फांसी की आज्ञा

पाइलट चाहता था कि ईसा को छोड़ दिया जाय और उसने फिर लोगों से बातचीत की, उसने कहा, "यह कैसी बात है कि आप लोग अपने 'बादशाह' को फांसी देना चाहते हैं?"

लेकिन यहूदियों ने जवाब दिया, "अगर आपने ईसा को छोड़ दिया तो आप यह जाहिर कर देंगे कि आप सीज़र के स्वामिभक्त नौकर नहीं हैं, क्योंकि जो अपने-आपको बादशाह बताता है, वह सीजर का शत्रु है। हमारा एक बादशाह सीज़र है, इसलिए इस 'बादशाह' को फांसी दो।"

जब पाइलट ने ये शब्द सुने तो उसने महसूस किया कि उसे ईसा को फांसी देनी ही चाहिए। वह यहूदियों के पास बाहर आया, अपने हाथों पर उसने पानी डाला, और बोला, "मैं इस बेगुनाह आदमी के खून से अपने हाथ नहीं रंगना चाहता।"

लोग चिल्लाए, "उसका खून हमारे और हमारे बच्चों के सिर पर रहने दो!"

तब पाइलट ने ईसा को पीटने का हुक्म दिया। जब सिपाही उन्हें पीट चुके तो उन्होंने उनके सिर पर ताज पहना दिया और उनके हाथ में एक लकड़ी थमा दी, उनके कंधों पर एक लाल ओढ़नी डाल दी और उनका मजाक उड़ाने लगे। वे उन्हें झुक-झुक कर सलाम करते और कहते, "यहूदियों के बादशाह की जय!" उन्होंने उनके मुँह और सिर पर प्रहार किये और उनके चेहरे पर थूका। वे सब चिल्लाते जाते थे, "इसे फांसी दो! हमारा बादशाह सीज़र है ..... इसे फांसी दो!"

अतः पाइलट ने ईसा को फांसी देने का हुक्म दिया। उन्होंने लाल ओढ़नी उतार ली और उनपर उन्हींके वस्त्र ओढ़ा दिये, और उन्हें फांसी के स्थान पर टिकटी ले जाने को कहा, ताकि उन्हें वहाँ फाँसी दी जा सके। इस जगह का नाम गॉलगोथा था।

उन्होंने उन्हें टिकटी पर कीलों से ठोंक दिया। दो दूसरे आदमियों को भी फांसी पर लटकाया गया। ईसा मध्य में थे और उनकी दोनों ओर एक-एक आदमी।

ईसा ने कहा, "परम-पिता उन्हें माफ करो, क्योंकि वे नहीं

जानते कि वे क्या कर रहे हैं !"

: ५२ :

अन्त

जब ईसा टिकटी पर लटक रहे थे तो लोगों ने उन्हें घेर लिया और गालियाँ दीं । कुछ लोग उनके पास तक आये, अपने सिरों को हिलाते हुए कहते, "देखो, तुम यरुसलम के गिर्जे को नष्ट करना चाहते थे और तीन ही दिन में फिर बना लेना चाहते थे । अच्छा ही हुआ न अब ! अपने-आपको बचाओ तो, इस टिकटी से उतरकर तो दिखाओ !"

लाट पादरी और स्क्रीबी वहाँ जमा हुए और उन पर हँसे । बोले, "वह दूसरों को बचाता था, लेकिन अपने-आपको नहीं बचा सकता ! अब दिखाओ कि तुम ईसा हो । टिकटी से उतर आओ तो हम तुमपर विश्वास कर लेंगे । यह कहता था कि प्रभु का पुत्र है और परमात्मा उसे भूलेंगे नहीं ····· अब परमात्मा ने उसे क्यों भुला दिया ?"

दूसरे लोगों, लाट पादरियों और सिपाहियों---सबने उन्हें गालियाँ दीं ।

जिन डाकुओं को उनके साथ ही फांसी दी गई थी उनमें से एक बोला, "अगर तुम ईसा हो तो अपने-आपको और हमें भी बचाओ ।" लेकिन दूसरे डाकू ने यह सुनकर कहा, "तुम प्रभु से डरते नहीं । खुद ही अपने बुरे कामों के लिए टिकटी पर लटके हुए हो । इसपर भी एक बेगुनाह आदमी को गाली देते हो ! तुमको और मुझे तो एक कारण से फांसी पर लटकाया गया है, लेकिन इस आदमी ने तो कुछ भी बुरा नहीं

किया।"

नौवें घंटे पर ईसा ने ऊँची आवाज में कहा, "मेरे प्रभु, हे मेरे स्वामी, तुमने मुझे क्यों भुला दिया है ?"

और जब लोगों ने यह सुना, वे हँसे और बोले, "वह एलियास नबी को बुला रहा है। आओ देखें तो कि एलियास आता है या नहीं।"

इसके बाद ईसा बोले, "मुझे पीने को कुछ दो।" और एक आदमी ने एक स्पंज लिया और उसे सिरके में डुबोकर और सरकंडे पर बाँधकर ईसा को दिया। ईसा ने स्पंज को चूस लिया और तब ऊँची आवाज़ में बोले, "मेरा काम पूरा हुआ। हे परम-पिता ! मैं अपनी आत्मा को आपके हाथों में सौंपता हूँ।"

इसके बाद उनका सिर ढलक गया और वह चिर-शांत हो गये।

●
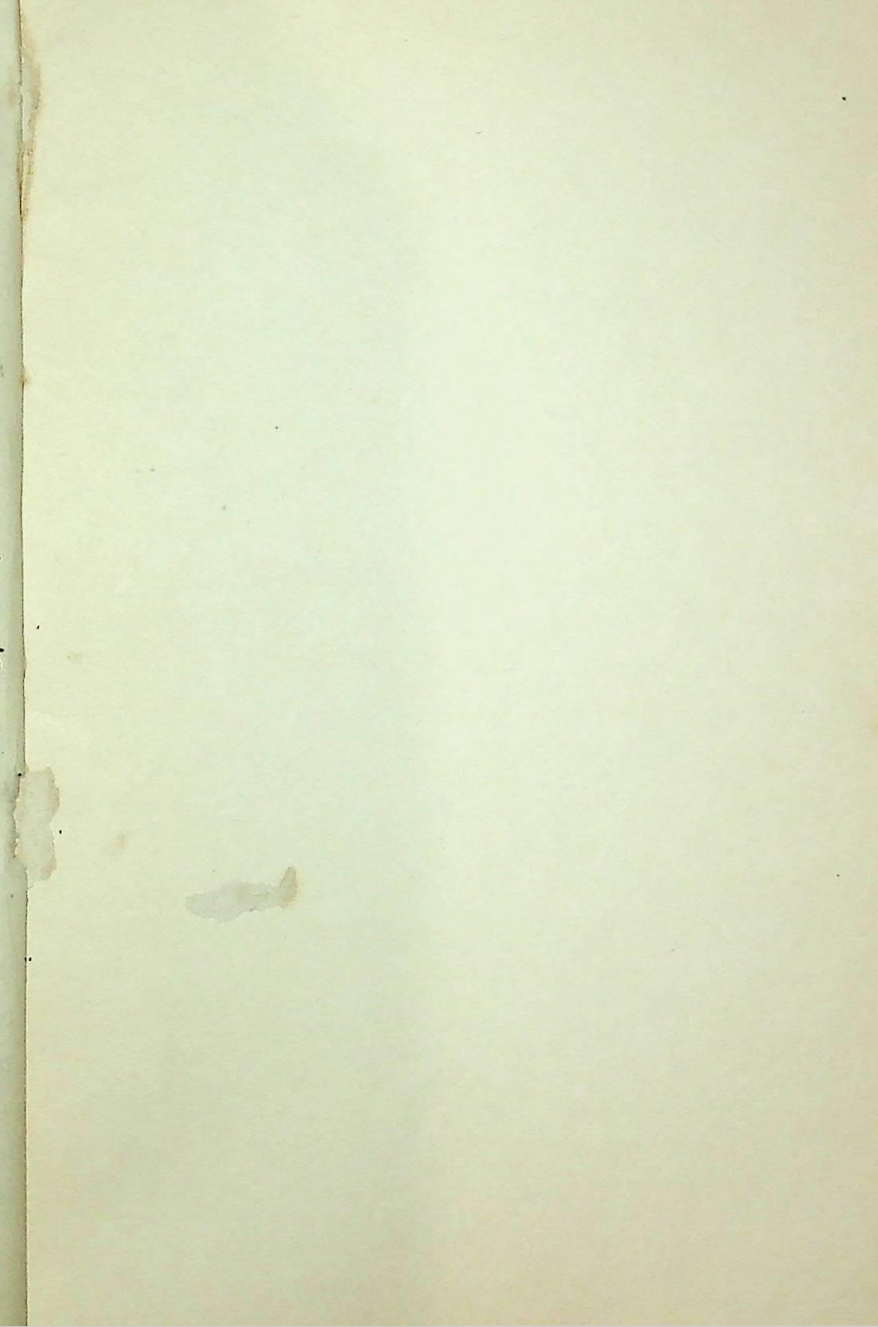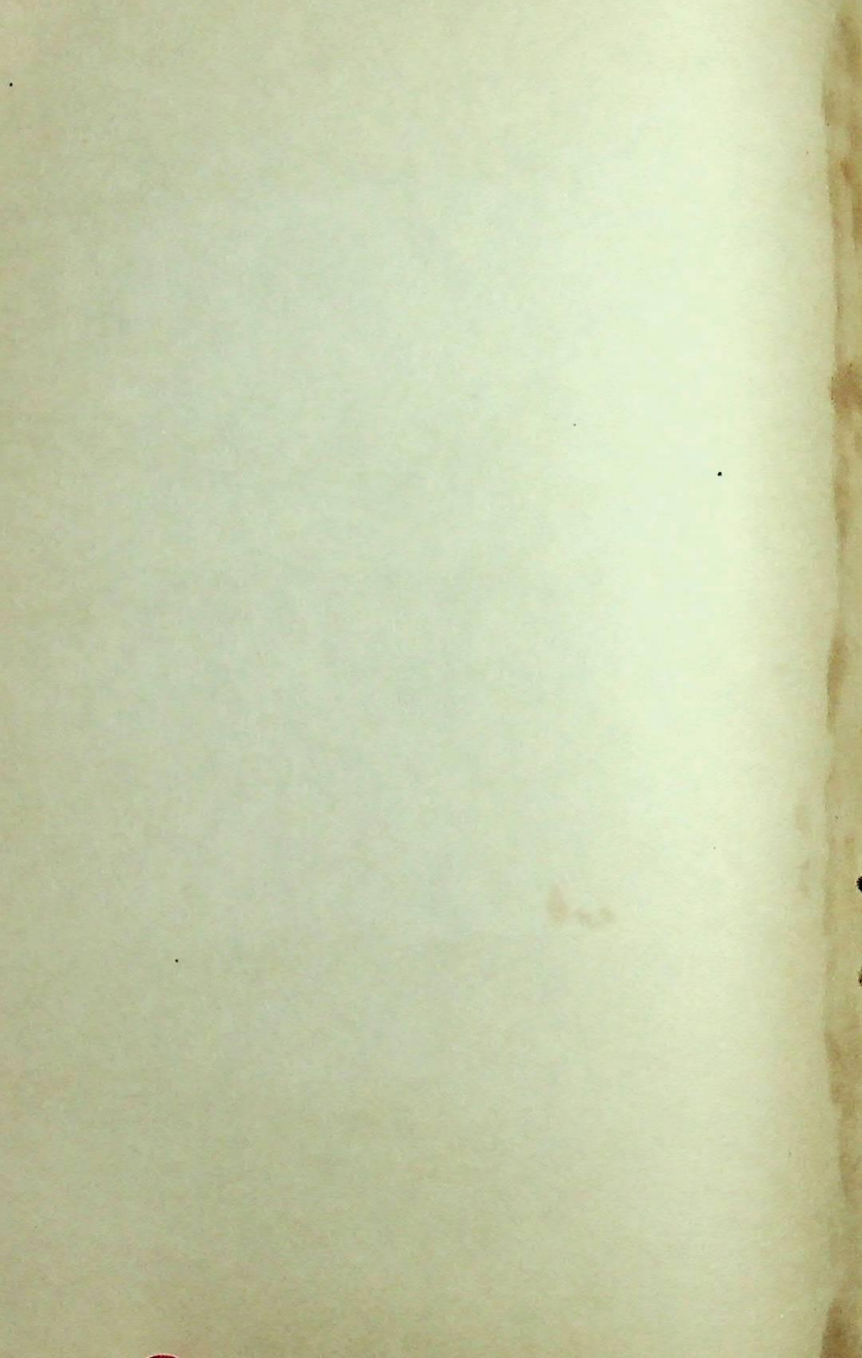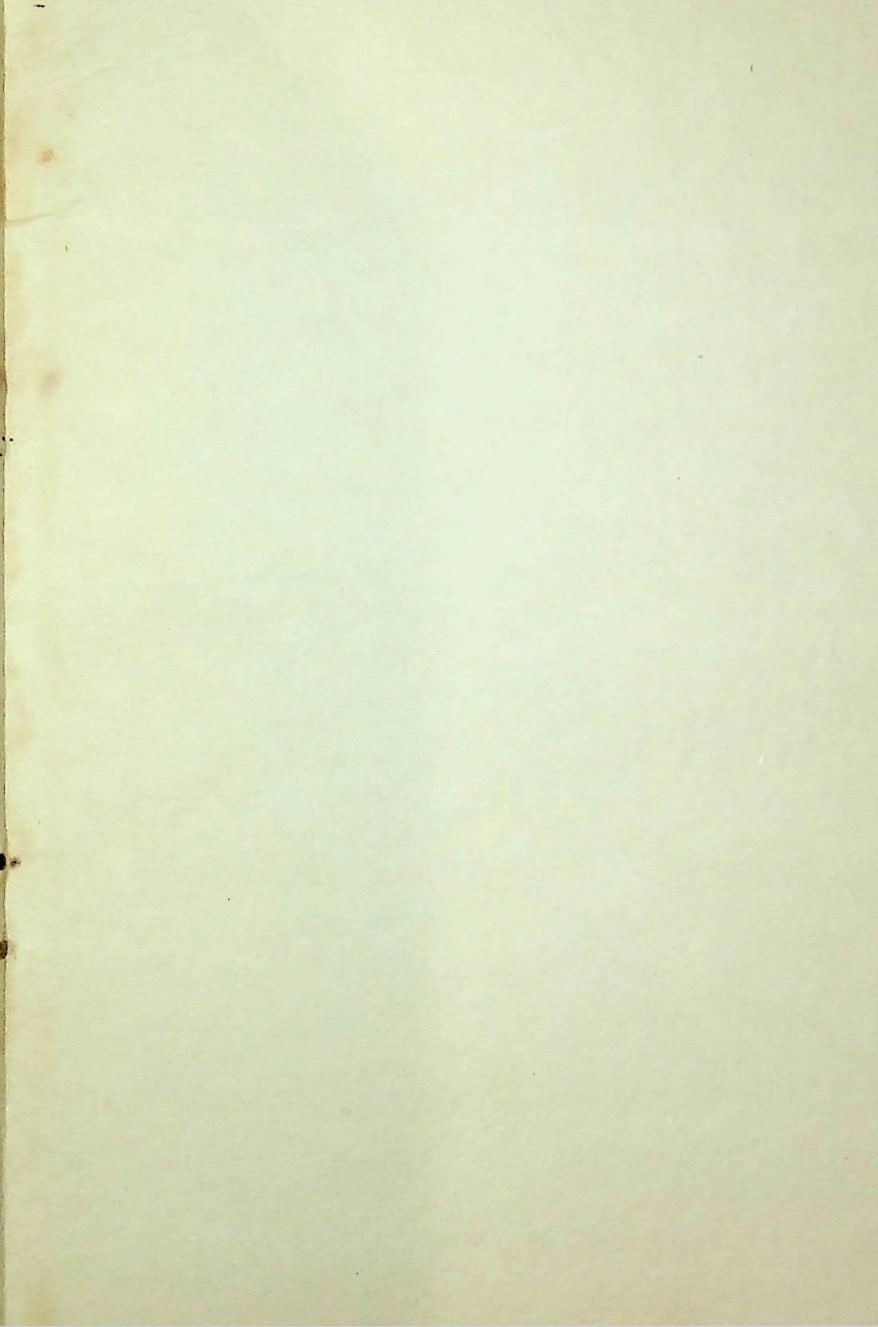
'मंडल' द्वारा प्रकाशित
लियो टॉलसटॉय का साहित्य

१. हम करें क्या
२. मेरी मुक्ति की कहानी
३. धर्म और सदाचार
४. हमारे जमाने की गुलामी
५. प्रेम में भगवान
६. कलवार की करतूत
७. सामाजिक कुरीतियां
८. स्त्री और पुरुष
९. अंधेरे में उजाला
१० जीवन-साधना
११ बालकों का विवेक
१२. बुराई कैसे मिटे
१३. ईसा की सिखावन

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन